॥ ॐ नमश्चण्डिकायै: ॥

॥ अथ ॥

मंत्र प्रतिलोम दुर्गासप्तशती

सम्पूर्ण विधि व अपराजिता प्रयोग सहिता

संयोजक—पं० अवधबिहारी शरण त्रिपाठी

श्री निवासधाम, मिर्जापुर

मुद्रक व प्रकाशक :—

श्री लोकनाथ पुस्तकालय

१७३, महात्मा गांधी रोड, कलकत्ता—७

तृतीय सं० २०००]

मूल्य १६=०० पैसे

विद्वानों की सम्मतियाँ

"पंडित कामता प्रसाद जी पाण्डेय", कुटी मैथिनी, पो०-जयसिंहपुर, जि०-सुल्तानपुर द्वारा संकलित यह मन्त्र प्रतिलोम दुर्गा सप्तशती एक अनुपम तांत्रिक ग्रन्थ है जिसके सविधि पाठ से सभी मनोरथ सिद्ध होते हैं।

—पं० रामाधार जी मिश्र (सुल्तानपुर)

"मन्त्र प्रतिलोम दुर्गा सप्तशती" का प्रकाशन होने से आर्त जनता का महान उपकार हुआ है :

(१) पं० रामलखन शर्मा ग्राम-हमजावाद, पो०-जयसिंहपुर (सुल्तानपुर)।

(२) स्वर्गीय पं० मातृप्रसाद जी पाण्डेय "ज्योतिषिन्द्र मुकुटमणि तन्त्रतत्वज्ञ", ग्राम-आही, (शंकर पाठशाला) मिर्जापुर।

(३) पं० श्री बृजनाथ जी पाण्डेय, भोरी-राज्य, वाराणसी।

(४) परमतान्त्रिक पं० रामप्रसाद जी शर्मा ([illegible]) विन्ध्याचल, मिर्जापुर।



देवता व ऋषियों द्वारा भगवती की स्तुति करना [पृष्ठ ८१]



ॐ कालाभ्राभां कटाक्षैररिकुलभयदां मौलिबद्धेन्दु रेखां,
शंखं चक्रं कृपाणं त्रिशिखमपि करैरुद्वहन्तीं त्रिनेत्राम्।
सिंहस्कन्धाधिरूढां त्रिभुवन मखिलं तेजसा पूरयन्तीम्,
ध्यायेद् दुर्गां जयाख्यां त्रिदश परिवृतां सेवितां सिद्धिकामैः।
या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्व लक्ष्मीः पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः।
श्रद्धा सतां कुलजन प्रभवस्य लज्जा, तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम्॥

प्रति
लोम
दुर्गा

श्री जगदम्बा के अनन्य भक्तों के प्रति

यह "मन्त्र प्रतिलोम दुर्गा सप्तशती" पुस्तक एक अलभ्य ग्रन्थ है। मुझे यह मैधिनी ग्राम, पत्रालय जयसिंहपुर, जिला-सुल्तानपुर के रहनेवाले गोस्वामी प्रवर पं० कामतानाथ जी पाण्डेय के यहां दृष्टि-गोचर हुई। ग.स्वामीजी की धाक उस ग्राम के चतुर्दिक इसलिए बंधी थी कि वह जो कुछ कह देते, ठीक वही होता। उनकी कीर्ति का, उनके बहुज्ञ होने का एकमात्र कारण यह पुस्तक ही है, इस बात को बहुत सोच विचार के अनन्तर मैंने उनसे इस पुस्तक की प्राप्ति के लिये अपमी आकांक्षा प्रकट की। "परोपकाराय सतां विभूतयः" के अनुसार उन्होंने इसे सहर्ष देने की कृपा की।

जिला-मिर्जापुर के आही ग्राम निवासी परम तान्त्रिक ज्योतिर्विद् पं० मातृप्रसाद पाण्डेय को जब मैंने यह पुस्तक दिखाई, उन्होंने इसकी बड़ी प्रशंसा की और छपाने के लिए, इसलिए परामर्श दिया कि यह सर्व विदित हो जाय।

तदनन्तर श्रीगुरुदेव की आज्ञा ले अपने अभिन्न हृदय मित्र श्री लोकनाथजी त्रिवेदी संचालक—श्रीलोकनाथ पुस्तकालय को यह कार्य भार सौंपा। उन्होंने बड़ी प्रसन्नता से इसे छापकर जनता की सेवा में प्रस्तुत किया। यदि इससे जन-हित साधन हुआ तो मैं अपने को कृत-कृत्य समझूँगा।

भवदीय:

पं० अवधविहारी शरण त्रिपाठी

आदर्श मन्दिर, श्री निवासधाम, मिर्जापुर

ग्रन्थ - परिचय

एकैव शक्तिः परमेश्वरस्य, भिन्ना चतुर्धा व्यवहार काले।
भोगे भवानी पुरुषेषु विष्णु, र्युद्धे च दुर्गा प्रलये च काली॥

परमेश्वर की एक ही शक्ति है। वह व्यवहार काल में विभिन्न रूप से चार प्रकार की हो जाती है। (और वही शक्ति) भोग में भवानी, पुरुषों में विष्णु, युद्ध में दुर्गा तथा प्रलय में काली की संज्ञा पाती है।

वैष्णवों में जिस प्रकार "श्रीमद्भागवतम्" सम्मान्य है, ठीक उसी प्रकार अथवा उससे भी बढ़ कर शाक्तों में "दुर्गासप्तशती"।

इस लोकप्रिय पुस्तक में अर्धश्लोक को कौन कहे, "उवाच" तक को मन्त्र स्वीकार किया गया है। इस प्रकार ७०० सौ मन्त्रों के होने के कारण ही इसका नाम सप्तशती पड़ा है।

इसकी उत्तमता और लोकप्रियता का अनुमान इससे भी लगाया जा सकता है कि इस ग्रन्थ रत्न की देखा-देखी अनेक सप्तशती ग्रन्थ लिखे गये। साहित्य जगत की सर्वोत्तम मानी जाने वाली श्रीभगवद्गीता भी सप्तशती ही है।

तान्त्रिकों ने "दुर्गा-सप्तशती" के विभिन्न मन्त्रों से तथा अन्यान्य अनेक मन्त्रों के सम्पुटित पाठ

प्रति

लोम

दुर्गा

विधि से अनेक कार्यों की सिद्धि का उल्लेख किया है और जो आज भी हमारी श्रद्धा और हमारे अटूट विश्वास के कारण लक्ष-लक्ष जन की मनोकामना प्रतिक्षण पूरी कर रहे हैं। दुर्गा सप्तशती का एक साधारण पाठ तो साधारण जनसमुदाय में प्रचलित ही है पर, इसमें विशेष पाठ भी है जैसा कि इस मन्त्र प्रतिलोम दुर्गा सप्तशती के विषय में निम्नलिखित श्लोक से प्रकट है।

"अन्त्याद्यार्क द्वि रुद्र त्रि, दिगब्ध्यंङ्केष्विभर्तवः।
अश्वोऽश्व इति सर्गानां, शापोद्धारोह्यनुक्रमः।"

(गुप्तवत्यां दुर्गा प्रदीपे)

इस श्लोक का अर्थ समझाने के पूर्व हम ऊपर के श्लोकार्ध का खण्ड कर देना चाहते हैं, जिससे पाठकों को उसे समझने में सरलता हो। अन्त्य (अन्तिम तेरहवाँ अध्याय), आद्य (प्रथम अध्याय) अर्क (बारहवाँ), द्वि (दूसरा), रुद्र (ग्यारहवां), त्रि (तीसरा, दिग् (दशम), अब्धि (चौथा), अङ्क (नवां), इषु (पांचबां; इभ (आठवां), ऋतु (छवां) तथा अश्वः अश्वः अर्थात् (सातवाँ २)।

अर्थात्; तेरहवां और प्रथम अध्याय के विलोम और अनुलोम पाठ साथ-साथ करने पड़ेगे। इसी प्रकार बारह और द्वितीय अध्याय; एकादश तथा तृतीय; दशम तथा चतुर्थ; नवम तथा पञ्चम; अष्टम तथा षष्ठ और सप्तम तथा सप्तम अध्याय के पाठ क्रमशः विलोम और अनुलोम करते हुए संयुक्त रूप से करनी चाहिए। यही शापोद्धार का अनुक्रम है।

"शीघ्र सिद्धि प्रदा पाठः प्रशस्तः सर्व कर्मसु।'

यह पाठ शीघ्र सिद्धि देने वाला है और सभी कार्यों में प्रशंसनीय है। उक्त प्रकार का पाठ अपनी एक बहुत बड़ी विशेषता इस बात की लिये हुए है कि "इसका एक पाठ साधारण दश पाठों के बराबर माना गया है।"

इस पाठ को देखकर साधारण जन-समुदाय भ्रम में पड़ जाता है घबड़ा उठता है तब, जब देखता है कि एक श्लोक तेरहवें अध्याय के अन्त का है और एक प्रथमाध्याय के प्रारम्भ का और तब उसके आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहता जब वह आगे बढ़ता है। इसी प्रकार अंग न्यास और कर-न्यास दोनों ही भिन्न व्यापार हैं, पर इसमें दोनों का ही एकीकरण किया गया है। इस बात से भी बहुत से जन-भौंचक्के रह जाते हैं। पर, आश्चर्य-चकित होने की कोई बात नहीं। श्रद्धा और विश्वास का सम्बल लेकर आप कम्बल पर बैठ उस महिष-मर्दिनी का, उस महामहिमामयी का साश्चर्य अजनित कार्य-कलाप का क्षण-क्षण निरीक्षण करने की शक्ति से युक्त शनैः शनैः अपने इन चर्म चक्षुओं को दिव्यचक्षु के रूप में परिणत होते पाइयेगा।

जिसकी कृपा कटाक्ष से क्षणमात्र में अनन्त ब्रह्माण्डों की रचना हो सकती है जिसके भ्रू-भंग से ही जगत् का विनाश अवश्यम्भावी हो, उस सर्वाश्चर्यमयी देवी की अराधना में, उसकी पूजा में हमारे पूर्वजों ने, इन्हीं तत्त्वों के बल पर विलक्षण शक्तियाँ प्राप्त की हैं।

प्रतिलोम शब्द से ही प्रकट है इसमें कुछ उल्टी सीधी बातें होगी।

इस पाठ के अतिरिक्त "उपासना कल्पतरु" तथा "कात्यायनी तन्त्र" नामक दोनों ग्रन्थों में तीन प्रकार के और पाठों के करने का विधान है :

(१) अनुलोम विलोमं च, ह्यनुलोमं पुनः पठेत् ।
शीघ्र सिद्धिद पाठोऽयं, सर्व-कार्य-प्रसाधकः ॥

प्रथम अनुलोम फिर विलोम तथा पुनः अनुलोम पाठ करने से शीघ्र सिद्धि प्राप्त होती है और वह सभी कार्यों का प्रसाधक होता है।

(२) अनुलोमं विलोमं च, शुम्भ दैत्य वधावधिः ।
अनुलोमं च शेषंतु, विपरीतं पठेत् पुनः ॥

शुम्भ दैत्य-वध अर्थात् दशम अध्याय तक अनुलोम पाठ करने के अनन्तर वहीं से विलोम पाठ अर्थात् दशम अध्याय से प्रथम अध्याय तक उलटा पाठ करके शेष अर्थात् एकादश अध्याय से त्रयोदश अध्याय तक अनुलोम पाठ करने के अन्तर पुनः तेरह से एकादश तक विलोम पाठ करना चाहिए।

पुनः प्रत्यहं नव-चण्डी पाठ क्रमः (फिर प्रतिदिन के नव-चण्डी पाठ का क्रम।

अनुलोमं विलोमं च, शापोद्धार क्रमं पठेत् ।
प्रत्यहं चण्डिका पाठं, नव-चण्डी विधौ स्मृतम् ॥

पहले अनुलोम तथा विलोम पाठ करने के अनन्तर शापोद्धार का पाठ करे।

पाठ में पाणिनीय शिक्षा के इस आदेश की ओर भी ध्यान देना आवश्यक है :

माधुर्यमक्षरव्यक्तिः पदच्छेदस्तु सुस्वरः ।
धैर्य्यं लय समर्थं च षडेते पाठकाः गुणाः ॥

मधुरता, अक्षरों का स्पष्ट उच्चारण, पदो का विच्छेद, सुस्वर धीरता तथा लय युक्त पाठ करना पाठ में गुण माना गया है।

उस सर्वदा (सब कुछ देनेवाली) भगवतीको ही सर्वदाके लिये गुरु स्वीकार करलें और इस पुस्तक में लिखी हुई विधि के अनुसार पाठ आरम्भ करें। तीनवर्ष तक प्रतिदिन पाठ कर लेनेके बाद "जगदम्बार्पणमस्तु" कह पाठ का साराफल उस महामाया को ही अर्पित कर देना चाहिए। इस निष्कामकर्म के प्रतिफल स्वरूप सम्भव है कि वह महादेवी आपकी परीक्षाये लें और आप उसमें सफल हों तब आप देखें अपना चमत्कार !!! और, वस्तुतः वह अकथ्य है, वह अव्यर्थ है, वह अपने आपकी वस्तु है।

आपका :

पं० ठाकुरप्रसादजी त्रिपाठी शास्त्री

व्याकरण-पुराणेतिहासाचार्य

अध्यापक : संस्कृत विभाग "लालारामलाल अग्रवाल कालेज", सिरसा (प्रयाग)

अथ

अपराजिता प्रयोग प्रारम्भः

अपराजिता देवी का प्रमाण कवच में ही आया हैं, भक्तजन इसे समझ लें।

ॐ नमो अपराजितायै । श्रीमद्द अपराजिता महामंत्र ॥ ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं कलिकुण्ड स्वामिनि अप्रतिचक्रे जये विजये अपराजिते अमुकं जृम्भय मोहय स्वाहा । इति पञ्चत्रिंशाक्षरी मोहिनी विद्या ।

(यह ३५ अक्षर का सिद्ध विद्या मोहिनी मन्त्र हैं । इसके ऋषि इत्यादि नहीं हैं)

न ध्यानं न जपश्चास्याः सिद्धि विद्या महामनोः । स्मरणादेव सर्वेषां सर्व सिद्धि प्रदा सदा । राजसद्मनि संग्रामे सभायां प्राण सङ्कटे । द्यूते विद्या प्रयोगे च जयलक्ष्मीप्रदो मनुः ॥ एकविंशतिवारान् यो जपं कुर्यात् विचक्षणः । मंत्रस्य सर्वकार्येषु तस्य वश्यं जगत्त्रयम् । प्रति

इस मन्त्र को २१ बार जपने से और उपरोक्त २ श्लोकों का पाठ करने से भक्त जिसे चाहे अपने वश में कर सकता हैं । लीम

* अथ द्वितीय प्रयोगः *

ॐ अस्या वैष्णव्या पराया अजिताया महाविद्यायाः वामदेव बृहस्पति मार्कण्डेय ऋषयः गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्बृहती छन्दांसि । लक्ष्मीनृसिंहो देवता, ॐ क्लीं श्रीं ह्रीं बीजानि । हुं शक्तिः । सकल कामना सिद्ध्यर्थम् अपराजिता विद्या मंत्र पाठे विनियोगः । दुर्गा

* अथ ध्यानम् *

ॐ नीलोत्पल-दल-श्यामां भुजाङ्गाभरणान्विताम् । शुद्ध स्फटिक सङ्काशां, चन्द्रकोटिनिभाननाम् ॥१॥ शङ्खचक्रधरां देवीं-वैष्णवीमपराजिताम् । बालेन्दु शेखरां देवीं-वरदाभय दायिनीम् ॥२॥ नमस्कृत्य प्रपाठेना-मार्कण्डेयो महातपाः ॥

प्रति

* मार्कण्डेय उवाच *

लोम

श्रृणुध्वं मुनयः सर्वं सर्वकामार्थ सिद्धिदाम् ॥३॥ असिद्धि साधिनीं देवीं-वैष्णवीमपराजिताम् ॥ ॐ नमो नारायणाय । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय॥ ॐ नमो स्त्वनन्ताय सहस्त्रशीर्षाय क्षीरोदार्णव शायिने शेषभोगे पर्यंकाय, गरुड़ वाहनाय, अमोघाय, अजाय, अजिताय पीत वाससे ॐ वासुदेव, सङ्कर्षण,प्रद्यु म्न,अनिरुद्ध,हयग्रीव,मत्स्य-कूर्म वाराह-नृसिंह-अच्युत-वामन-

दुर्गा

त्रिविक्रम-श्रीधर-राम, राम, राम। वरद-वरद वरदोभव नमोऽस्तुते, नमोऽ-
स्तुते नमोऽस्तुते स्वाहा ॥

ॐ असुर-दैत्य-दानव-यक्ष-राक्षस-भूत-प्रेत-पिशाच-कूष्माण्ड-सिद्ध
योगिनी-डाकिनी-शाकिनी-स्कन्दग्रहान्-उपग्रहान्नक्षत्रग्रहांश्चाऽन्यान् हन-
हनपचपच मथमथ-विध्वंसय-विध्वंसय विद्रावय विद्रावय चूर्णय-चूर्णय-शं-
खेनचक्रेण वज्रेण-शूलेन-गदया-मुसलेन-हलेन भस्मी कुरु कुरु स्वाहा।

ॐ सहस्रबाहो-सहस्र प्रहरणायुध, जय जय, विजय विजय, अजित
अमित, अपराजित, अप्रतिहत-सहस्रनेत्र-ज्वल ज्वल-प्रज्वल प्रज्वल, विश्वरूप
बहुरूप-मधुसूदन, महावराह-महापुरुष-वैकुण्ठ-नारायण, पद्मनाभ-गोविन्द-
दामोदर-ऋषिकेश केशव-सर्वासुरोत्सादन-सर्वभूत-वशङ्कर-सर्वदुःस्वप्नप्रभे-
दन, सर्वयंत्र प्रभंजन, सर्वनाग निमर्दन सर्वदेवमहेश्वर-सर्वबंधन विमोक्षण-

सर्वाहित प्रमर्दन-सर्वज्वरप्रणाशनसर्वग्रह-निवारण, सर्वपाप प्रशमन-जनार्दन, नमोऽस्तुते स्वाहा ॥

॥ अस्यफलम् ॥

विष्णोरिय मनुप्रोक्ता, सर्वकामफलप्रदा, सर्वसौभाग्यजननी, सर्व भीति विनाशिनी ॥१॥ सर्वैश्च पठिता सिद्धै र्विष्णोः परम वल्लभा। नाऽनया सदृशं किंचिद्द ष्टानांनाशनंपरम् ॥२॥ विद्या रहस्याकथिता वैष्णव्येषाऽपरा-जिता। पठनीया प्रशस्ता वा, साक्षात् सत्वगुणाश्रया ॥ ॐ शुक्लाम्बरधरं विष्णुं, शशिवर्णं चतुर्भुजम्, प्रसन्न वदनं ध्यायेत्सर्व विघ्नोपशान्तये ॥ अथाऽतः सम्प्रवक्ष्यामि ह्यभयामपराजिताम्। या शक्तिर्मामकी वत्स। रजोगुण मयीमता ॥ सर्व सत्वमयी साक्षात्, सर्वमंत्रमयी च या। यास्मृता पूजिताजप्ता न्यस्ता कर्मणिथाजिता ॥ सर्व कामदुघा वत्स, श्रणुष्वै तां

प्रति लोम दुर्गा १४

ब्रवीमि ते । य इमामपराजितां परम वैष्णवीमप्रतिहतां पठति, सिद्धां स्मरतिसिद्धां, महाविद्यां जपति पठति श्रृणोति, स्मरति, धारयति, कीर्तयति वा. नतस्याऽग्नि-वायु-वज्रोपलाऽशनि वर्षभयं न समुद्रभयं, न ग्रहभयं, न चौरभयं, न शत्रुभयं, न श्वापद्भयं, वा भवेत् ॥ क्वचिद्रात्र्यन्धकार स्त्री-राजकुल-विद्वेषि-विषोपविषग' गरद् वशीकरण, विद्वेषणोच्चाटन, वध बंधन भयं वा न भवेत् ॥

॥ अथ तृतीय प्रयोग ॥

एतेर्मन्त्रैरुदाहृतैः सिद्धै संसिद्ध पूजितैः ।

ॐ नमोऽस्तुते ॥ अभये, अनघे, अजिते, अमिते, अमृते, अपरे, अपराजिते, पठितसिद्धे, जपितसिद्धे, स्मरितसिद्धे, एकोनाशीतितमेएकाकिनि निश्चेतसि, सुद्रुमे, सुकन्धे, एकान्नशे, उमे, ध्रुवे, अरुन्धति, गायत्रि, सावित्री

जातवेदसि, मानस्तोके, सरस्वति, धरणि, धारिणि, सौदामनि, अदिति, दिति, विनते, गौरि, गान्धारि, मातंगि, कृष्णे यशोदे, सत्यवादिनि, ब्रह्मवादिनि, कालि कपालिनि, करालनेत्रे, भद्रे, निद्रे, सत्योपयाचनकरी, स्थलगतं, जलगतं, अन्तरिक्षगतं वा मां रक्ष रक्ष सर्व भूतभयोपद्रवेभ्यः स्वाहा।

॥ अस्यमाहात्म्यम् ॥

यस्याः प्रणश्यते पुष्पं गर्भो वा पतते यदि । म्रियते बालको यस्याः काकबन्ध्या च या भवेत् ॥१॥ धार येद्या इमां विद्या मेतैर्दोषैर्नलिप्यते ॥ गर्भिणी, जीववत्सा स्यात्पुत्रिणी स्यान्न संशय ॥२॥ भूर्जपत्रे त्विमांविद्या लिखित्वा गन्धचन्दनैः । एतैर्दोषैर्नलिप्येत सुभगापुत्रिणी भवेत् ॥३॥ रण राजकुले द्यूते, नित्यन्तस्य जयो भवेत् ॥ शस्त्रं वारयतेह्येषां समरे काण्डदारुणे ॥४॥ गुल्म शूलाक्षि रोगाणां, क्षिप्रन्नाशयति व्यथाम् ॥ शिरोरोग

ज्वराणां च नाशिनी सर्वदेहिनाम् । इत्येषा कथिता विद्या अभयाख्या-
ऽपराजिता ॥५॥ एतस्याः स्मृति मात्रेण भयं क्वापि न जायते । नोप-
सर्गा न रोगाश्च न योधा नाऽपि तस्कराः ॥६॥ न राजानो न सर्पाश्च न प्रति
द्वेष्टारो न शत्रवः । यक्ष-राक्षस-बेताल न शाकिन्यो न च ग्रहाः ॥७॥
अग्नेर्भयं न वाताच्च न समुद्रान्न वै विषात् । कार्मणं वा शत्रुकृतं वशी- लोम
करणमेव च ॥८॥ उच्चाटनं स्तम्भनं च विद्वेषणमथापि वा । न किञ्चित्
प्रभवेत् तत्र यत्रैषा वर्ततेऽभया ॥९॥ पठेत् वा यदि वा चित्रे पुस्तके दुर्गा
वा मुखेऽथवा । हृदि वा द्वारदेशे वा वर्त्तते ह्यभयः पुमान् ॥१०॥ हृदये
विन्यसेदेतां ध्यायेद्देवीं चतुर्भुजाम् । रक्तमाल्याम्बरधरां पद्मरागसमप्रभाम्
॥११॥ पाशाऽङ्कुशाऽभय-वरैरलङ्कृतसुविग्रहाम् । साधकेभ्य- प्रयच्छन्तीं १७
मन्त्रवर्णामृतान्यपि ॥१२॥ नातः परतरं किञ्चिद्वशीकरणमुत्तमम् । रक्षणं २

पावनं चापि नाऽत्र कार्या विचारणा ॥१३॥ प्रातः कुमारिकाः पूज्याःखाद्यैः
राभरणैरपि । तदिदं वाचनीयं स्यात् तत्प्रीत्या प्रीयते तु माम् ॥१४॥ ॐ
अथातः सम्प्रवक्ष्यामि विद्यामपि महाबलाम् । सर्वदुष्टप्रशमनीं सर्वशत्रुक्षय-
ङ्करीम् ॥१५॥ दारिद्र्यदुःखशमनीं दौर्भाग्यव्याधिनाशिनीम् । भूतप्रेत
पिशाचानां यक्षगन्धर्वरक्षसाम् ॥१६॥ डाकिनी शाकिनी स्कन्द कूष्माण्डानां
च नाशिनीम् । महारौद्रीं महाशक्ति सद्यः प्रत्ययकारिणीम् ॥१७॥ गोपनीयं
प्रयत्नेन सर्वत्वं पार्वतीपतेः तामहं ते प्रवक्ष्यामि सावधानमनाः शृणु ।१८॥
एकाह्निकं द्व्यह्निकं चातुर्थिकार्द्धमासिकम् । द्वैमासिकं त्रैमासिकं तथा
चातुर्मासिकम् ॥१९॥ पञ्चमासिकं षाण्मासिकं वातिक पैत्तिकज्वरम् । श्लेः-
ष्मिक सान्निपातिके तथैव सततज्वरम् ॥२॥ मौहूर्तिकं पैत्तिकं शीतज्वरं
विषमज्वरम् । द्व्यह्निकं त्र्यह्निकं चैव ज्वरमेकान्हिकं तथा ॥२१॥ क्षिप्रं
नाशयते नित्यं स्मरणादपराजिता ।

* मन्त्रः *

ॐ ह्रीं हन हन, कालि शर-शर, गौरि धम-धम, विद्ये आले ताले माले गन्धे बन्धे पच-पच विद्ये नाशय नाशय पापं हर संहारय वा दुःखस्वप्न विनाशिनी कमलस्थिते विनायकमातः रजनि सन्ध्ये, दुन्दुभिनादे,मानस-वेगे, शङ्खिनि चक्रिणि, गदिनि, वज्रिणि, शूलिनि, अपमृत्युविनाशिनि, विश्वेश्वरि, द्रविड़ि द्राविड़ि,द्रविणि द्राविणि,केशवदयिते,पशुपतिसहिते, दुन्दुभिदमनि, दुर्म्मददमनि। शबरि किराति मातङ्गि ॐ द्रुं द्रुं ज्रुं ज्रुं क्रुं क्रुं तुरु तुरु ॐ द्रुं कुरु कुरु।

ये मां द्विषन्ति प्रत्यक्षं परोक्षं वा तान् सर्वान् दम दम मर्दय मर्दय तापय तापय गोपय गोपय पातय पातय शोषय शोषय उत्सादय उत्सादय ब्रह्माणि वैष्णवि माहेश्वरि कौमारि वाराहि नारसिंहि ऐन्द्रि चामुण्डे महा-

लक्ष्मी वैनायिकि औपेन्द्रि आग्नेयि चण्डि चामुण्डे वारुणि वायव्ये नैऋर्ति सौम्ये ऐशानि ऊर्ध्वमधो रक्ष प्रचण्डविद्ये इन्द्रोपेन्द्रभगिनी ।

ॐ नमो देवि जये विजये शान्ति-स्वस्ति-तुष्टि-तुष्टि-विवर्द्धिनि ।

कामांकुशे कामदुधे सर्वकामवरप्रदे । सर्वभूतेषु मां प्रियं कुरु कुरु स्वाहा । आकर्षणि आवेशनि ज्वालामालिनि रमणि रामणि धरणि धारणि तपनि तापनि मदनि मादनि शोषणि संमोहनि नीलपताके महानीले महागौरि महाश्रिये ।

महाचान्द्रि महासौरि महामायूरि आदित्यरश्मि जाह्नवि । यमघण्टे किणि किणि चिन्तामणि । सुगन्धे सुरभे सुराऽसुरोत्पन्ने सर्वकामदुधे यद्यथा मनीषितं कार्यं तन्मम सिद्ध्यतु स्वाहा । ॐ स्वाहा । ॐ भूः स्वाहा । ॐ भुवः स्वाहा । ॐ स्वः स्वाहा । ॐ महः स्वाहा । ॐ जनः

स्वाहा । ॐ तपः स्वाहा । ॐ सत्यं स्वाहा । ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा । यत
एवागतं पापं तत्रैव प्रतिगच्छतु स्वाहेत्योम् ।

अमोघैषा महाविद्या वैष्णवी चापराजिता । स्वयं विष्णुप्रणीता च प्रति
सिद्धेयं पाठतः सदा । एषा महाबला नाम कथिता तेऽपराजिता । नाऽनया
सदृशी रक्षा त्रिषु लोकेषु विद्यते । तमोगुणमयी साक्षाद्रौद्री शक्तिरियं लोम
मता । कृतान्तोऽपि यतो भीतः पादमूले व्यवस्थितः । मूलाधारे न्यसेदेतां
रात्रावेनां च संस्मरेत् । नीलजीमूतसङ्काशां तडित्कपिलकेशिकाम् । उद्यदा-
दित्यसङ्काशां नेत्रत्रयविराजिताम् । शक्ति त्रिशूलं शंखं पानपात्रं च दुर्गा
बिभ्रतीम् । व्याघ्रचर्मपरीधानां किङ्किणीजालमण्डिताम् । धावन्तीं गगन
स्यान्तः पादुकाहितपादकाम् । दन्ष्ट्राकरालवदनां व्यालकुण्डलभूषिताम् । २१
व्यात्तवक्त्रां ललज्जिह्वां भृकुटीकुटिलालकाम् । स्वभक्तद्वेषिणां रक्तं पिवन्तीं

पानपात्रतः। सप्तधातून् शोषयन्तीं क्रूरदृष्ट्या विलोकनात्। त्रिशूलेन च तज्जिह्वाँ कीलयन्ती मुहुर्मुहुः। पाशेन बद्ध्वा तं साध्यमानयन्तीं तदन्तिके। अर्द्धरात्रस्य समये देवीं ध्यायेन्महाबलाम्। यस्य यस्य वदन्नाम जपेन्मन्त्रं निशान्तके तस्य तस्य तथावस्थां कुरुते साऽपि योगिनी। ॐ बले महाबले असिद्धसाधनी स्वाहेत्योगम्। अमोघां पठितसिद्धां श्रीवैष्णवीं श्रीमदपराजितविद्यां ध्यायेत्। दुःस्वप्ने दुररिष्टे च दुर्निमित्ते तथैव च। व्यवहारे भवेत् सिद्धिः पठेद्विघ्नोपशान्तये। इत्यपराजितविद्या समाप्ता।

यदत्र पाठे जगदम्बिके मया विसर्गविन्द्वक्षरहीनमीडितम्।
ततस्तु सम्पूर्णतके प्रयान्तु मे सङ्कल्पसिद्धिस्तु सदैव जायताम्॥ १ ॥

तव तत्त्वं न जानामि कीदृशोसि महेश्वरि।

यादृशासि महादेवि। तादृशायै नमो नमः।

प्रति
लोम
दुर्गा

* आरती श्री विन्ध्यवासिनी जी की *

आरति श्री विन्ध्यवासिनी की, शुद्ध बुद्धि गुण विकाशिनी की ।
यशुदा सुता भक्त मन रञ्जनि, सकल पाप त्रय ताप विभञ्जिनि ॥
काम क्रोध ममता मद् गञ्जिनि, तत्व ज्ञान पर प्रकाशी की ।
आरती श्री विन्ध्यवासिनी की ॥

विश्वोत्पत्ति स्थितिलयकारिरि, स्वाहा स्वधा चराचर धारिणि ।
दुष्ट निशुम्भ, शुम्भ संहारिणि, रक्तबीज खल विनाशनी की ॥ आ०
अमित अनाथन आश्रय दाता, पूजत जेहि हर विष्णु विधाता ।
जगज्जया जननी जगमाता, निज्ञ इच्छा बल विलासिनी की ॥ आ०
निगमागम पुराण अष्टादश, नेति-नेति बरणत जेहि को यश ।
अवध बिहारी को धन सरबस, कृपायुक्त मृदु सुहासिनी की ॥ आ०

प्रति
लीम
दुर्गा
२३

* श्री दुर्गा सप्तशती की आरती *

आरती श्री सप्तशती की, ज्ञान खानि दाता सुगती की ॥
मार्कण्डेय ग्रथित अति सुन्दर, मेधा तिथिवरणित कीरति वर ।
वैश्य समाधि सुरथ भूपति कर, शक्ति चरित माता सुमती की ॥
आरती श्री सप्तशती की ॥

कवच कील अरगला सुहावन, सूक्त रहस्य अनूपम पावन ।
त्रयोदशाध्याई मन भावन, आश्रय सकल गृहस्थ यती की ॥ आ०
तीनहुं चरित वेद सुर छन्दा, शक्ति बीज सह तत्वानन्दा ।
न्यासकरत कलिकलुषनिकंदा, ऋषिविधि हरि अरु उमापतिकी॥आ०
पढ़त होत भगवति अनुकूला, विनशत सब संकट सह मूला ।
'अवधबिहारी' भव में मूला, आश्रय दो हरि चरण रती की ॥ आ०

प्रति लोम दुर्गा

* अथ मंत्र प्रतिलोम दुर्गा सप्तशती पाठ-विधि *

प्रातःकालीन सन्ध्योपासनादि से निवृत होकर कवच, अर्गला, कीलक का पाठ करके नर्वाण, न्यास और जप करके 'रात्रिसूक्त' का पाठ करे, तब निम्न विनियोग करे।

ॐ अस्य श्री विलोम अनुलोम सहित सप्तशती उत्तम प्रथम मध्यम चरितस्य रुद्र, ब्रह्म, विष्णु ऋषयः श्रीसरस्वती महाकाली महालक्ष्मी देवताः अनुष्टुप गायत्री त्रिष्टुप्छन्दांसि भीमा नन्दा शाकम्भरी शक्तयः भ्रामरी रक्त दन्तिका दुर्गा बीजानि सूर्याग्नि वायुस्तत्वानि साम ऋग्यजुर्वेदाध्यानानि ॐ अद्य अमुक गोत्र अमुक शर्म्माहम् आत्मनः सकल काम संसिध्यर्थम् श्री सरस्वती महाकाली महालक्ष्मी देवता प्रीत्यर्थे विलोम-अनुलोम सहित सप्तशती पाठे विनियोगः ॥१॥

* अथ करन्यास *

सर्वस्वरूपे सर्वेशे, अस्त्राय फट् करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। खड्गिनी शूलिनी घोरा हृदयाय नमः। अंगुष्ठाभ्यां नमः। खड्गशूलगदादीनि, नेत्रत्रयाय वौषट्। कनिष्ठिकाभ्यां नमः। शूलेन पाहिनो देवि, सिरसे स्वाहा। तर्जनीभ्यां नमः। सौम्यानि यानि रुपाणि, कवचायहुं अनामिकाभ्यांनमः। प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च, शिखायै वषट्। मध्यमाभ्यां नमः।

॥ अथ ध्यानम् ॥

घण्टाशूल हलानि १ खड्ग चक्रगदेषु २ अक्षस्त्रक्परशुम् ॥३॥

इस क्रम से इन सब कार्यों से निवृत होकर तब पाठ प्रारम्भ करे। पठान्ते देवी सूक्तं नवार्णजपं रहस्यं च पठेत्।

● इस जगह यदि किसी यजमान का करना है तो इस जगह उसी यजमान के नाम और गोत्र की योजना करें। ● इतिशम् ●

* अथ *

मन्त्रप्रतिलोम दुर्गासप्तशती

॥ प्रारम्भ ॥

नित्यकर्म कृत्वा ध्यान पूर्वकं दुर्गार्चनं कुर्यात् ॥ कवचाऽर्गलाकीलकं पठेत् नवार्ण मन्त्र न्यास पूर्वकं जपेत् ॥ रात्रिसूक्त पठेत् शापोद्धार उत्कीलनं कृत्वा ततः प्रत्यहं नव चण्डी पाठं अनुलोम विलोम मन्त्रो प्रतिलोम पाठ क्रमः ॥१॥

ॐ सावर्णिर्भवितामनुः ॥ १ ॥ मार्कण्डेय उवाच
॥ २ ॥ एवंदेव्या वरं लब्ध्वा सुरथः क्षत्रियर्षभः । सूर्याज्जन्म
समासाद्य सावर्णिर्भवितामनुः ॥ ३ ॥ सावर्णिस्सूर्यतनयो
यो मनुः कथ्यतेऽष्टमः निशामय तदुत्पत्तिविस्तराद् गदतो-
मम ॥ ४ ॥ इति दत्वातयोर्देवी यथाभिलषितंवरम् ।
बभूवान्तर्हिता सद्योभक्त्या ताभ्यामभिष्टुता ॥ ५ ॥ महा-
मायानुभावेन यथा मन्वन्तराधिपः । स बभूवमहाभागः
सावर्णिस्तनयोरवेः ॥ ६ ॥ मार्कण्डेय उवाच ॥ ७ ॥ स्वा-
रोचिषेन्तरेपूर्वं चैत्र वंश समुद्भवः । सुरथोनाम राजाभूत्स-
मस्ते क्षितिमण्डले ॥ ८ ॥ तन्प्रयच्छामिसंसिद्धये तव

ज्ञानंभविष्यति ॥ ९ ॥ तस्यपालयतः सम्यक् प्रजाः पुत्रा
निवौरसान् । बभूवुः शत्रवोभूपाः कोलाविध्वंसिनस्तदा
॥ १० ॥ वैश्यवर्यत्वया यश्च वरोऽस्मत्तोऽभिवांछितः ॥ ११ ॥ प्रति
तस्यतैरभवद्युद्धमतिप्रबल दण्डिनः । न्यूनैरपि सतैर्युद्धे-
कोलाविध्वंसिभिर्जितः ॥ १२ ॥ सावर्णिको नाम मनु लोम
र्भवान् भुविभविष्यति ॥ १३ ॥ ततःस्वपुरमायातो निज
देशाधिपोऽभवत् । आक्रान्तः स महाभागस्तैस्तदा प्रबला- दुर्गा
रिभिः ॥ १४ ॥ मृतश्चभूयः सम्प्राप्य जन्म देवाद्विवस्वतः
॥ १५ ॥ अमात्यैर्बलिभिर्दुष्टैःदुर्बलस्य दुरात्मभिः । कोशो- २६
हत्वारिपूनस्खलितं
बलंचापहृतं तत्रापिस्वपुरेततः ॥ १६ ॥

तव तत्र भविष्यति ॥ १७ ॥ ततोमृगया व्याजेन हृतस्वा-
म्यः स भूपतिः । एकाकी हयमारुह्य जगाम गहनं वनम्
॥ १८ ॥ स्वल्पैरहोभिर्नृपतेस्वं राज्यं प्राप्स्यते भवान्
॥ १९ ॥ स तत्राश्रममद्राक्षीद् द्विजवर्यस्यमेधसः । प्रशान्त-
श्वापदाकीर्णं मुनिशिष्योपशोभितम् ॥ २० ॥ देव्युवाच
॥ २१ ॥ तस्थौ कञ्चित्सकालंच मुनिनातेन सत्कृतः । इत-
श्चेतश्च विचरं स्तस्मिन् मुनिवराश्रमे ॥ २२ ॥ सोपिवैश्य-
स्ततो ज्ञानवब्रे निर्विण्णमानसः । ममेत्यहमिति प्राज्ञः सङ्ग
विच्युतिकारकम् ॥ २३ ॥ सोऽचिन्तयत्तदातत्र ममत्वा कृष्ट
चेतनः । मत्पूर्वैः पालितम्पूर्वं मयाहीनं पुरं हि तत् ॥ २४ ॥

ततौ वब्रे नृपो राज्यमविभ्रंश्यन्य जन्मनि । अत्रैव च निजं
राज्यं हतशत्रुबलं बलात् ॥ २५ ॥ मद्भृत्यै स्तैरसद्वृत्तै-
धर्मतः पाल्यते न वा । न जाने सप्रधानोमे शूरहस्ती- प्रति
सदामदः ॥ २६ ॥ मार्कण्डेय उवाच ॥ २७ ॥ ममवैरिवशं
यातः कान् भोगानुपलप्स्यते । ये ममानुगतानित्यं प्रसाद- लोम
धनभोजनैः ॥ २८ ॥ यत्प्रार्थ्यते त्वया भूप त्वया च कुल-
नन्दन। मत्तस्तत्प्राप्यतां सर्वंपरितुष्टा ददामि तत् ॥ २९ ॥ दुर्गा
अनुवृत्तिं ध्रुवन्तेऽद्य कुर्वन्त्यन्य महीभृताम् ।असम्यग्व्यय
शीलैस्तैः कुर्वद्भिः सततंव्ययम् ॥ ३० ॥ देव्युवाच ॥ ३१ ॥ ३१
संचितःसोऽति दुःखेन क्षयंकोशोगमिष्यति । एतच्चान्यच्च

सततं चिन्तयामास पार्थिवः ॥ ३२ ॥ परितुष्टा जगद्धात्री
प्रत्यक्षंप्राहचण्डिका ॥ ३३ ॥ तत्र-विप्राश्रमाभ्यासे वश्यमेकं
ददर्श सः । सपृष्टस्तेन कस्त्वंभोहेतुश्चागमनेऽत्रकः ॥ ३४ ॥
ददतुस्तौ बलिंचैव निजगात्रा सृग्गुक्षितम् । एवं समाराध-
यतो स्त्रिभिर्वर्षैंयतात्मनोर्यः ॥ ३५ ॥ सशोक इवकस्मात्वं
दुर्मना इवलक्ष्यसे । इत्याकर्ण्य वचस्तस्य भूपतेः प्रणयोदि-
तम् ॥ ३६ ॥ अर्हणां चक्र तुस्तस्या पुष्प धूपाग्नितर्पणैः ।
निराहारौ यताहारौ तन्मनस्कौ समाहितौ ॥ ३७ ॥ प्रत्यु
वाच स तं वैश्यः प्रश्रयावनतोन्नृपम् ॥ ३८ ॥ सच वैश्यस्त
पस्तेपे देवी सूक्तंपरं जपन् । तौतस्मिन्पुलिने देव्याः कृत्वा

मूर्तिम्महीं मयीम् ॥ ३९ ॥ वैश्य उवाच ॥ ४० ॥ जगा-
मशाद्यस्तपसे सच वैश्यो महामुने । सन्दर्शनार्थं मम्बाया
नदी पुलिन संस्थितः ॥ ४१ ॥ समाधिर्नाम वैश्योऽहमु-
त्पन्नो धनिनांकुले ॥ ४२ ॥ प्रणिपत्य महाभागं तमृषि
संशित व्रतम् । निर्विणोंति ममत्वेन राज्या पहरणेनच
॥ ४३ ॥ पुत्रदारैर्निरस्तश्च धनलोभाद साधुभिः । विहीनश्च
धनैर्दारैः पुत्रैरादाय मे धनम् ॥ ४४ ॥ इतितस्यवचः श्रुत्वा
सुरथः स नराधिपः ॥ ४५ ॥ वनमभ्या गतोदुःखी निरस्त-
श्चाप्त बन्धुभिः । सोऽहं न वेद्मि पुत्राणां कुशला कुशला-

तिमकाम् ॥ ४६ ॥ मार्कण्डेय उवाच ॥ ४७ ॥ प्रवृत्तिं स्व-
जनानाञ्च दाराणाञ्चात्र संस्थितः । किन्नु तेषां गृहेक्षेम मक्षेमं
किन्नु साम्प्रतम् ॥ ४८ ॥ आराधिता सैव नृणाम्भोगस्वर्गा- प्रति
पवर्गदा ॥ ४९ ॥ कथंतेकिन्नुसद्वृत्ता दुर्वृत्ताः किन्नुमे सुताः
॥ ५० ॥ मोह्यन्ते मोहिताश्चैव मोहमेष्यन्तिचापरे । तामु- लोम
पैहिमहाराजशरणं परमेश्वरीम् ॥ ५१ ॥ राजोवाच ॥ ५२ ॥
विद्या तथैव क्रियते भगवद्विष्णु मायया । तयात्वमेष दुर्गा
वश्यश्च तथैवान्ये विवेकिनः ॥ ५३ ॥ यैर्निरस्तो भवाँल्लुब्धैः
पुत्रदारादिभिर्धनैः ॥ ५४ ॥ एतत्ते कथितं भूप देवी माहा- ३४

तस्य मुत्तमम् । एवं प्रभावा सा देवी य येदं धार्यते जगत्
॥ ५५ ॥ तेषुकिंभवतः स्नेह मनुवध्नाति मानसम् ॥ ५६ ॥
ॐऋषिरुवाच ॥ ५७ ॥ वैश्य उवाच ॥ ५८ ॥ स्तुता सम्पू- प्रति
जिता पुष्पैर्धूप गन्धादिभिस्तथा । ददाति वित्तं पुत्रांश्च
मतिंधर्मे गतिंशुभाम् ॥ ५९ ॥ एवमेतद्यथा प्राह भवान लीम
स्मद्गतं वचः ॥ ६० ॥ भवकालेन्नृणां सैवलक्ष्मीर्वृद्धि प्रदा-
गृहे । सैवाभावे तथा लक्ष्मीर्विनाशायोप जायते ॥ ६१ ॥ दुर्गा
किंकरोमि न बध्नाति मम निष्ठुरतांमनः । यैः सन्त्यज्य-
पितृस्नेहं धनलुब्धैर्निराकृतः ॥ ६२ ॥ सैवकाले महामारी ३५

सैव सृष्टिर्भवत्यजा । स्थितिंकरोति भूतानां सैवकाले सना-
तनी ॥ ६३ ॥ पतिस्त्वजनहार्दं च हार्दितेष्वेव मे मनः ।
किमेतन्नाभिजानामि जानन्नपिमहामते ॥६४॥ व्याप्तं तयै प्रति
तत्सकलं ब्रह्माण्डं मनुजेश्वर । महाकाल्या महाकाले महा-
मारी स्वरूपया ॥ ६५ ॥ यत्प्रेमप्रवणं चित्तंविगुणेष्वपि लोम
बन्धुषु । तेषां कृते मे निःश्वासो दौर्मनस्यं च जायते॥६६॥
तयैतन्मोहिते विश्वंसैवविश्वंप्रसूयते ।सा याचिता च विज्ञा- दुर्गा
नन्तुष्टा ऋद्धिम्प्रयच्छति ॥६७॥ करोमि किं यन्नमनस्ते-
ष्व प्रीतिषु निष्ठुरम् ।६८॥ एवं भगवती देवी सा नित्यापि ३६

पुनः पुनः । सम्भूय कुरुते भूप जगतः परिपालनम् ॥६९॥
मार्कण्डेय उवाच ॥ ७० । जगद्विध्वंसिनि तस्मिन्महोग्रे-
ऽतुलविक्रमे । निशुम्भेचमहावीर्येंशेषाः पातालमाययुः प्रति
॥ ७१ ॥ ततस्तौ सहितौ विप्र तं मुनिंसमुपस्थितौ ॥७२॥
यज्ञभाग भुजःसर्वें चक्रुर्विनिहतारयः।दैत्याश्चदेव्याः निहते- लोम
शुम्भे देव रिपौयुधि ॥ ७३॥ समाधिर्नाम वैश्योऽसौ स च
पार्थिव सत्तमः । कृत्वातु तौ यथान्यायं यथार्हन्तेन संवि- दुर्गा
दम् ॥७४॥ पश्यतामेव देवानांतत्रैवांतरधीयत । तेऽपिदेवा- ३७
निरातंकाःस्वाधिकारान्यथापुरा ॥ ७५ ॥ उपविष्टौ कथाः

काश्चिच्चक्रतुर्वैश्यपार्थिवौ ॥ ७६ ॥ इत्युक्त्वा सा भगवती
चण्डिका चण्डविक्रमा ॥ ७७ ॥ राजोवाच ॥ ७८ ॥ ऋषि-
रुवाच ॥ ७९ ॥ भगवंस्त्वामहं प्रष्टुमिच्छाम्येकम्वदस्वतत् प्रति
॥ ८० ॥ दूरादेवपलायन्ते स्मरतश्चरितंमम ॥ ८१ ॥
दुःखाय यन्मे मनसः स्वचित्तायायत्ततांबिना । ममत्वं गत लोम
राज्यस्यराज्यांगेष्वखिलेष्वपि ॥८२॥ स्मरन्ममैतच्चरित-
न्नरो मुच्यतेसङ्कटात् । ममप्रभावात्सिंहाद्यादस्यवोवैरिण- दुर्गा
स्तथा ॥८३॥ जानतोऽपि यथाज्ञस्य किमेतन्मुनि सत्तम ।
अयं च निकृतः पुत्रैर्दारैर्भृत्यैस्तथोज्झितः ॥८४॥ पततु- ३८

चापि शस्त्रेषु संग्रामेभृशदारुणे । सर्वाबाधा सुघोरासु वेदना
भ्यर्दितोऽपिवा ॥ ८५ ॥ स्वजनेन च सन्त्यक्तस्तेषु हार्दी-
तथाप्यति । एवमेषतथाहंच द्वावप्यत्यन्त दुःखितौ ॥८६॥
राज्ञाक्रुधेनचाज्ञप्तो वध्योबन्ध गतोऽपिवा । आघूर्णितोवा
वातेन स्थितः पोतेमहार्णवे ॥ ८७ ॥ दृष्टदोषेऽपि विषये
यमत्वाकृष्ट मानसौ । तत्किमेतन्महाभाग यन्मोहोज्ञा नि-
नोरपि ॥८८॥ दस्युभिर्वावृतः शून्ये गृहीतोवापि शत्रुभिः ।
सिंहव्याघ्रानुयातो वा वनेवा वनहस्तिभिः ।८९॥ ममास्य
च भवत्येषा विवेकान्धस्य मूढता ॥९०॥ ब्रह्मणा च कृता-

स्तास्तु प्रयच्छन्ति शुभाम्मतिम् । अरण्ये प्रान्तरे वापि
दावाग्नि परिवारितः ॥ ११ ॥ ऋषिरुवाच ॥ १२ ॥ तस्मि-
न्भू ते वैरिकृतंभयं पुंसान्नजायते । युष्माभिःस्तुतयो याश्च प्रति
याश्चब्रह्मर्षिभिःकृताः ॥ १३ ॥ ज्ञानमस्ति समस्तस्य जन्तो-
र्विषय गोचरे ॥ १४ ॥ रक्षांकरोति भूतेभ्यो जन्मनाकीर्तनं लोम
मम । युद्धेषु चरितं यन्मे दुष्ट दैत्य निबर्हणम् ॥ १५ ॥
विषयश्च महाभाग याति चैव पृथक् पृथक् । दिवान्धाः दुर्गा
प्राणिनः केचिद्रात्रा वंधास्तथापरे । १६ ॥ प्रीतिर्मेक्रियते
सास्मिन्सकृत्सुचरिते श्रुते । श्रुतं हरति पापानि तथाऽऽरोग्यं- ४८

म्प्रयच्छति ॥ ९७ ॥ केचिद्दिवातथा रात्रौ प्राणिनस्तुल्य
दृष्टयः । ज्ञानिनो मनुजास्सत्यं किन्नुतेन हि केवलम् ॥९८॥
विप्राणां भोजनैर्होमैः प्रोक्षणीयैरहर्निशम्। अन्यैश्च विविधै- प्रति
र्भोगैः प्रदानैर्वत्सरेण या ॥ ९९ ॥ यतोहिज्ञानिनस्सर्वे पशु-
पक्षिमृगादयः । ज्ञानं च तन्मनुष्याणां यत्तेषांमृगपक्षिणाम् लोम
॥१००॥ सर्वम्ममैतन्माहात्म्यं मम सन्निधिकारकम् । पशु-
पुष्पार्घ्यधूपैश्च गन्धदीपैस्तथोत्तमैः ॥१०१ मनुष्याणां च दुर्गा
यत्तेषां तुल्यमन्यत्तथोभयोः । ज्ञानेऽपि सति पश्यैतान्पत- ४१
ङ्गाच्छावचञ्चुषु ॥१०२॥ दुर्वृत्तानामशेषाणां बलहानिकरं-

परम् । रक्षोभूतपिशाचानां पठनादेव नाशनम् ॥१०३॥ रूण-
मोक्षा द्दतान्मोहात्पीड्यमानानर्पक्षुधा । मानुषाः मनुज-
व्याघ्र समभिलाषाः सुतान्प्रति ॥१०४॥ बालग्रहाभिभूतानां प्रति
बालानां शान्तिकारकम् । संघातभेदे च नृणां मैत्रीकरण-
मुत्तमम् ॥१०५॥ लोभात्प्रत्युपकारायनन्वेतान् किंन पश्यति । लोम
तथापि ममतावर्तैमोहगर्तै निपातिताः ॥१०६॥ उपसर्गाः
शमं यान्ति ग्रहपीडाश्च दारुणाः। दुस्वप्नंच नृभिर्दृष्टं सुस्वप्न- दुर्गा
मुपजायते ॥१०७॥ महामाया प्रभावेण संसारस्थितिकारिणा-
तन्नात्र विस्मयः कार्यो योगनिद्रा जगत्पतेः ॥१०८॥ शान्ति- ४२

कर्मणि सर्वत्र तथा दुःस्वप्नदर्शने । ग्रहपीडासु चोग्रासु महा-
त्म्यं शृणुयान्मम ॥१०९॥ महामाया हरेश्चैषा तया सन्मो-
ह्यते जगत् । ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा प्रति
॥११०॥ रिपवः संक्षयं यान्तिकल्याणं चोपपद्यते । नन्दते
च कुलं पुसां महात्म्यम्मम शृण्वताम् ॥१११॥ बलादा- लोम
कृष्य मोहाय माहामाया प्रयच्छति। तयाविधृज्यते विश्वं
जगदेतच्चराचरम् ॥ ११२ ॥ श्रुत्वा ममैतन्माहात्म्यं तथा दुर्गा
चोत्पत्तयः शुभाः । पराक्रमञ्च युद्धेषु जायते निर्भयः पुमान्
॥११२॥ सैषा प्रसन्ना वरदा नृणाम्भवति मुक्तये । सा विद्या ४३

परमा मुक्तेर्हेतु भूता सनातनी ॥ ११४ ॥ सर्वा बाधाविनि-
र्मुक्तो धनधान्यसुतान्वितः । मनुष्योमत्प्रसादेन भविष्यति
न संशयः ॥ ११५ ॥ संसार बन्धहेतुश्च सैव सर्वेश्वरेश्वरी प्रति
॥ ११६ ॥ शरत्काले महापूजा क्रियते या च वार्षिकी
तस्यांममैतन्माहात्म्यं श्रुत्वा भक्ति समन्वितः ॥ ११७ ॥ लोम
राजोवाच ॥ १ ८॥ जानता जानता वापि बलिपूजान्तथा
कृताम् । प्रतीक्षिष्याम्यहम्प्रीत्यावह्निहोमन्तथा कृतम् दुर्गा
॥ ११९ ॥ भगवन्काहि सा देवी महामायेति यान्भवान्
॥१२० ॥ बलिप्रदाने पूजायामग्निकार्ये महोत्सवे सर्वम्म- ४४

मैतच्चरितमुच्चार्यं श्राव्यमेव च ॥१२१॥ ब्रवीति कथमुत्पन्ना
सा कर्म्मास्याश्चकिंद्विज। यत्प्रभावा च सा देवी यत्स्वरूपा
यदुद्भवा॥१२२॥यत्रैतत्पठ्यतेसम्यङ्नित्यमायतनेमम।सदा- प्रति
नतद्विमोक्ष्यामि सान्निध्यंतत्रमेस्थितम् ॥ १२३॥ तत्सर्वं
श्रोमिच्छामि त्वत्तो ब्रह्मविदाम्बर ॥१२४॥ उपसर्गान शेषां- लोम
स्तुमहामारीसमुद्भवान् । तथात्रिविधमुत्पातम्माहात्म्यं शम-
येन्मम ॥२२५॥ ऋषिरुवाच । १२६ ॥ तस्मान्ममैतन्माहा- दुर्गा
त्म्यं पठितव्यं समाहितैः । श्रोतव्यं च सदाभक्त्या परं स्व-
स्त्ययनंहितम् ॥ १२७॥ नित्यैवसाजगन्मूर्तिस्तया सर्वं मिदं

ततम् ॥१२८॥ शत्रुतोनभयंतस्य दस्युतोवानराजतः । न
शस्त्रानलयोयौधाकदाचित्सम्भविष्यति ॥१२९॥ तथापि
तत्समुत्पत्तिर्बहुधा श्रूयताम्मम । देवानां कार्यसिद्ध्यर्थ-
माविर्भवति सा यदा ॥१३०॥ न तेषां दुष्कृतंकिञ्चिद्दुष्कृतो-
त्थान चापदः । भविष्यति न दारिद्र्यन्न चैवेष्ट वियोजनम्
॥ १३१॥ उत्पन्नेति तदालोके सानित्याप्यभिधीयते ।
योगनिद्रां यदा विष्णुर्जगत्येकार्णवीकृते ॥१३२॥ अष्ट-
म्यांचचतुर्दश्यान्नवम्याञ्चैकचेतसः । श्रोष्यंतिचैव ये भक्त्या
ममममाहात्म्य मुत्तमं ॥ १३३ ॥ आस्तीर्यंशेषमभजत्क-

लपान्ते भगवान्प्रभुः । तदाद्भवसुरौघोरौ विख्यातौ
मधुकैटभौ ॥१३४॥ मधुकैटभ नाशञ्च महिषासुर घातनं ।
कीर्तयिष्यन्तियेतद्वद्वधं शुम्भनिशुम्भयोः ॥१३५॥ विष्णु- प्रति
कर्णमलोद्भूतौहन्तुं ब्रह्माणमुद्यतौ । स नाभिकमले विष्णोः
स्थितो ब्रह्मा प्रजापतिः ।१३६। एभिस्तवैश्चमां नित्यं स्तो- लोम
ष्यते यस्समाहितः ।तस्याहं सकलां बाधां नाशयिष्याम्य-
संशयं ।१३७। दृष्ट्वा तावसुरौचोग्रौ प्रसुप्तंञ्च जनार्दनम् । दुर्गा
तुष्टाव योगनिद्रांतामेकाग्रहृदयस्थितः ॥ १३८ ॥ देव्युवाच
॥१३९॥विबोधनार्थाय हरेर्हरिनेत्र कृतालयाम् । विश्वेश्वरीं ४७

जगद्धात्रीं स्थिति संहारकारिणीम् ॥१४०॥ तदा तदावती-
र्यांहं करिष्याम्यरि संक्षयम् ।१४१। निद्रां भगवतीं विष्णो-
रतुलां तेजसां प्रभुः ।१४२। भ्रामरीति च मां लोकास्तदा- प्रति
स्तोष्यन्ति सर्वतः । इत्थं यदा यदा बाधादानवोत्थाभवि-
ष्यति ।१४३। ब्रह्मोवाच ।१४४। तदाहं भ्रामरंरूपं कृत्वा- लोम
संख्येय षट्पदम् । त्रैलोक्यस्य हितार्थाय वधिष्यामि महा-
सुरम् ।१४५। त्वं स्वाहा त्वं स्वधात्वंहि वषट्कारः स्वरा- दुर्गा
त्मिका ।१४६। भीमादेवीति विख्यातं तन्मेनामभविष्यति
यदारुणाख्यं त्रैलोक्ये महाबाधां करिष्यति ॥१४७॥ सुधा- ४८

त्वमक्षरेनित्ये त्रिधामात्रात्मिकास्थिता । अर्द्धमात्रास्थिता
नित्यायानुच्चार्या विशेषतः ॥१४८॥ रक्षांसिभक्षयिष्यामिमु- प्रति
नीनांत्राणकारणात् । तदामांमुनयस्सर्वे स्तोष्यन्त्या नम्र-
मूर्तयः ॥१४९॥ त्वमेवसंन्ध्या सावित्रीत्वं देविजननीपरा । लोम
त्वयैतद्धार्यतेविश्वंत्वयैतत्सृज्यते जगत् ॥१५०॥ दुर्गादेवीति
विख्यातं तन्मेनाममभविष्यति । पुनश्चाहं यदा भीमंरूपं- दुर्गा
कृत्वा हिमाचले ॥१५१॥ त्वयैतत्पाल्यतेदेवि त्वमत्स्यन्ते च
सर्वदा । विसृष्टौ सृष्टिरूपात्वंस्थिति रूपा च पालने ॥१५२॥ ४६
शाकम्भरीति विख्यातिं तदा यास्याम्यहम्भुवि । तत्रैव- ४

चबधिष्यामि दुर्गमाख्यम्महासुरम् । ॥१५३॥ तथा संहृति
रूपान्ते जगतोऽस्य जगन्मये । महाविद्या महामाया महा-
मेधा महास्मृतिः ॥१५४॥ ततोहमखिलं लोकमात्मदेह- प्रति
समुद्भवैः । भरिष्यामि सुराशाकैरावृष्टैः प्राणधारकैः॥१५५॥
महामोहा च भवती महादेवी महासुरी । प्रकृतिस्त्वं च लोम
सर्वस्य गुणत्रयविभाविनी ॥१५६॥ ततः शतेननेत्राणां
निरीक्षिष्यामियन्मुनीन् । कीर्तयिष्यन्ति मनुजाः शताक्षी- दुर्गा
मीति मां ततः ॥१५७॥ कालरात्रिर्महारात्रिर्मोहरात्रिश्च
दारुणा । त्वं श्रीस्त्वमीश्वरीस्त्वं ह्रीस्त्वं बुद्धिर्बोधलक्षणा ५०

॥१५८॥ भूयश्च शतवार्षिक्यामनावृष्ट्यामनम्भसि । मुनि-
भिःसंस्तुताभूमौ सम्भविष्याम्ययोनिजा ॥१५९॥ लज्जा
पुष्टिस्तथा तुष्टिस्त्वं शान्ति क्षान्तिरेवच। खड्गिनीशूलिनी
घोरागदिनी चक्रिणी तथा ॥१६०॥ ततोमांदेवताः सर्वे
मर्त्यलोके च मानवाः । स्तुवन्तोऽव्याहरिष्यन्ति सततं रक्त-
दन्तिकाम् ॥१६१॥ शङ्खिनी चापिनी वाणाभुशुण्डीपरिघा-
युधा। सौम्या सौम्यतराशेषसौम्येभ्यस्त्वतिसुन्दरी ॥१६२॥
भक्षयन्त्याश्च तानुग्रान्वैप्रचित्तान्महासुरान्। रक्तादन्ता
भविष्यन्ति दाडिमीकुसुमोपमाः ॥१६३॥ परापराणाम्परमा

त्वमेव परमेश्वरी। यच्च किञ्चित्क्वचिद्वस्तुसदसद्वाखिलात्मिके
॥१६४॥ पुनरप्यतिरौद्रेण रूपेण पृथिवीतले। अवतीर्य
हनिष्यामि वैप्रचित्तांस्तु दानवान् ॥१६५॥ तस्य सर्वस्य प्रति
या शक्तिः सा त्वं किं स्तूयसे तदा। ययात्वया जगत्स्रष्टा
जगत्पात्यत्ति यो जगत्॥१६६॥ नन्दगोपगृहे जाता यशोदा लोम
गर्भसम्भवा। ततस्तौ नाशयिष्यामि विन्ध्याचलनिवासिनी
॥१६७॥ सोऽपि निद्रा वशंनीतःकस्त्वांस्तोतुमहेश्वरः। दुर्गा
विष्णुःशरीर ग्रहणमहमीशान एव च ॥१६८॥ वैवस्वतेऽ-
न्तरे प्राप्ते अष्टाविंशतिमे युगे। शुम्भो निशुम्भश्चवान्या- ५२

वुत्पत्स्येते महासुरौ ॥१६९॥ कारितास्ते यतोऽतस्त्वां कः-
स्तोतुं शक्तिमान् भवेत् । सा त्वमित्थं प्रभावैःस्वैरुदारर्दैवि
संस्तुता ॥१७०॥ देव्युवाच ॥१७१॥ मोहयैतो दुराधर्षावसुरौ प्रति
मधुकैटभौ । प्रबोधञ्च जगत्स्वामी नीयतामच्युतो लघु
॥१७२॥ सर्वाबाधा प्रशमनं त्रैलोकस्याखिलेश्वरि । एवमेव लोम
त्वया कार्यमस्मद्वैरिविनाशनम् ॥१७३॥ बोधश्च क्रियता-
मस्य हन्तुमेतौ महासुरौ॥१७४॥ देवा ऊचुः ॥१७५॥ ऋषि- दुर्गा
रुवाच ॥१७६॥ वरदाहं सुरगणाः वरं यन्मनसेच्छथ । तं ५३
वृणुध्वं प्रयच्छामि जगतामुपकारकम् ॥१७७॥ एवंस्तुता

तदा देवी तामसी तत्रवेधसा ॥१७८॥ देव्युवाच ॥१७९॥
विष्णोः प्रबोधनार्थाय निहन्तुं मधुकैटभौ। नेत्रास्यनासिका-
बाहुहृदयेभ्यस्तथोरसः ॥१८०॥ प्रणतानां प्रसीदत्वं देवि प्रति
विश्वार्तिहारिणि। त्रैलोक्यवासिनीमीड्ये लोकानां वरदा
भव ॥१८१॥ निर्गम्य दर्शने तस्थौ ब्रह्मणोऽव्यक्तजन्मनः। लोम
उत्तस्थौ च जगन्नाथस्तयामुक्तोजनार्दनः ॥१८२॥ देवि
प्रसीद परिपालय नोरिभीतेर्नित्यं यथा सुरवधादधुनैवसद्यः। दुर्गा
पापानि सर्वजगतां प्रशमं नयाशु उत्पातपाकजनितांश्च
महोपसर्गान् ॥१८३॥ एकार्णवेऽहिशयनात्ततः स ददृशे च

तौ । मधुकैटभौ दुरात्मानावतिवीर्यं पराक्रमौ ।१८४॥
विश्वेश्वरि त्वं परिपासिविश्वं विश्वात्मिका धारयसीति-
विश्वम् । विश्वेशवंद्या भवती भवन्ति विश्वाश्रयायेत्वयि प्रति
भक्तिनम्राः ॥१८५॥ क्रोधरक्तेक्षणावत्तुं ब्रह्माणं जनितो-
द्यमौ । समुत्थाय ततस्ताभ्यां युयुधेभगवान हरिः ॥१८६॥ लोम
रक्षांसियत्रोग्रविषाश्च नागाः यत्रारयो दस्युबलानि यत्र ।
दावानलो यत्र तथाब्धि मध्ये तत्रस्थितात्वं परिपासि ह्वर्गा
विश्वम् ॥१८७॥ पञ्च वर्ष सहस्राणि बाहुप्रहरणो विभुः । ५५
तावप्यतिबलोन्मत्तौ महामाया विमोहितौ ॥१८८॥ विद्यासु

शास्त्रेषु विवेकदीपेष्वाद्येषुवाक्येषुचकात्वदन्या । ममत्वगर्तेऽ-
तिमदान्धकारे विभ्रामयत्येतदतीवविश्वम्॥१८९॥उक्तवन्तौ
वरोऽस्मत्तो व्रियतामिति केशवम् ॥१९०॥ एतत्कृतं यत्क- प्रति
दनन्त्वयाद्यधर्मद्विषांदेविमहासुराणाम् । रूपैरनेकैर्बहुधात्म-
मूर्तिंकृत्वाम्बिके तत्प्रकरोतिकान्या ॥१९१॥ श्रीभगवानुवाच लोम
॥१९२॥ रोगानशेषानपहंसितुष्टारुष्टातुकामान्सकलानभी-
ष्टान् । त्वामाश्रितानांनविपन्नराणां त्वामाश्रिताह्याश्रयतां- दुर्गा
प्रयान्ति ॥१९३॥ भवेतामद्यमेतुष्टौ मम वध्यावुभावपि
॥१९४॥ असुरासृग्वसापंकचर्चितस्ते करोज्ज्वलः । शुभाय- ५६

खड्गोभवतु चण्डिकेत्वान्नतावयम् ॥१९५॥ किमन्येन वरे-
णात्रस्तावद्धि वृतम्मम ॥१९६॥ हिनस्ति दैत्यतेजांसिस्वने-
नापूर्य्यया जगत् । सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्योऽनस्सुता- प्रति
निव ॥१९७॥ ऋषिरुवाच ॥१९८॥ ज्वालाकराल मत्युग्रम-
शेषाः सुरसूदनम् । त्रिशूलम्पातुनोभीतेर्भद्रकालि नमोस्तुते लोम
॥१९९॥ वञ्चिताभ्यामिति तदा सर्वमापोमयं जगत्
॥२००॥ एतत्ते वदनंसौम्यं लोचनत्रयभूषितम् पातुनस्सर्व- दुर्गा.
भूतेभ्यः कात्यायनि नमोऽस्तुते ॥२० ॥ विलोक्यताभ्यां ५७
गदितोभगवान् कमलेक्षणः । आवांजहि न यत्रोर्वीसलिले-

नपरिप्लुता ॥२०२॥ सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते ।
भयेभ्यस्त्राहिनोदेवि दुर्गेदेविनमोऽस्तुते ॥२०३॥ ऋषिरुवाच
॥२०४॥ मेधे सरस्वतिवरे भूतिबाभ्रमितामसि । नियतेत्वं- प्रति
प्रसीदेशे नारायणि नमोस्तुते ॥२०५॥ तथेत्युक्ता भगवता
शङ्खचक्रगदाभृता । कृत्वा चक्रेणवैछिन्नेजघने शिरसीतयोः लोम
॥२०६॥ लक्ष्मीलज्जे महाविद्ये श्रद्धे पुष्टि स्वधे ध्रुवे । महा-
रात्रि महाविद्ये नारायणि नमोऽस्तुते ॥२०७॥ एवमेषासमु- दुर्गा
त्पन्ना ब्रह्मणासंस्तुता स्वयम् । प्रभावमस्यादेव्यास्तुभूयः
श्रृणुवदामिते ॥२०८॥ दंष्ट्राकरालवदने शिरोमालाविभूषणे । ५८

चामुण्डेमुण्डमथने नारायणि नमोऽस्तुते ॥२०९॥ऋषिरुवाच
॥२१०॥ शिवदूती स्वरूपेण हतदैत्यमहाबले । घोररूपे
महारावे नारायणि नमोऽस्तुते ॥२११॥ देवा सुरमभूद्युद्ध- प्रति
सम्पूर्णमब्द शतम्पुरा । महिषे सुराणामधिपे देवानां च पुर
न्दरे ॥२१२॥ किरीटिनि महावज्रे सहस्रनयनोज्वले । वृत लोम
प्राणहरेचैन्द्रि नारायणि नमोस्तुते ॥२१३॥ तत्रासुरैर्महा-
वीर्यैर्देवसैन्यमपराजितम् । जित्वा च नकलान्देवान्निद्रोऽ- दुर्गा
भून्महिषासुरः । २१४॥ नृसिंहरूपेणोग्रेणसहन्तुं दत्यान्कृ-
तोद्यमे । त्रैलोक्यत्राणसहिते नारायणि नमोऽस्तुते॥२१५। ५६

ततः पराजितादेवाः पद्मयोनिम्प्रजापतिम् । पुरस्कृत्य
गतास्तत्र यत्रेश गरुड़ध्वजौ ॥२१६॥ गृहीतोग्रमहाचक्रे
दंष्ट्रोधृतवसुन्धरे। वाराहरूपिणी शिवे नारायणि नमोऽस्तुते प्रति
॥२१७॥ यथा वृत्तन्तयोस्तद्वन्महिषासुरचेष्टितम् । त्रिदशाः
कथयामासुर्देवाविभवविस्तरम् ॥२१८॥ शङ्खचक्रगदाशार्ङ्ग- लोम
गृहीत परमायुधे ।प्रसीद वैष्णवीरूपे नारायणि नमोऽस्तुते
॥२१९॥ सूर्येण्द्राग्न्यनिलेन्दूनां यमस्य वरुणस्य च। दुर्गा
अन्येषां चाधिकारान् सस्वयमेवाधितिष्ठति ॥२२०॥ मयूर-
कुक्कुटवृते महाशक्ति धरेऽनघे कौमारीरूपसंस्थाने नारा- ६०

यणि नयोऽस्तुते ॥१२१॥ स्वर्गान्निराकृताः सर्वे तेन देव-
गणाभुवि। विचरन्ति यथा मर्त्यांमहिषेण दुरात्मना ॥२२२॥
त्रिशूलचन्द्राहिधरे युहावृषभवाहिनि । माहेश्वरीस्वरूपेण प्रति
नारायणि नमोस्तुते ॥२२३॥ एतद्वः कथितं सर्वममरारिवि-
चेष्टितम् । शरणं वः प्रपन्नाःस्मोवधस्तस्य विचिन्त्यताम् लीम
॥२२४॥ हंसयुक्तविमानस्थे ब्रह्माणीरूपधारिणि। कौशाम्भः
क्षरिके देवि नारायणि नमोऽस्तुते ॥२२५॥ इत्थं निशम्य दुर्गा
देवानां वचांसि मधुसूदनः । चकार कोपं शुम्भुश्च भृकुटी-
कुटिलाननौ ॥२२६॥ शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे । ६१

सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोस्तुते ॥२२७॥ ततोऽति
कोपपूर्णस्य चक्रिणो वदनात्ततः । निश्चक्राम महत्तेजो
ब्रह्मणः शङ्करस्य च ॥२२८॥ सृष्टि स्थित विनाशानां प्रति
शक्तिभूते शनातनि । गुणाश्रये गुणमये नारायणि नमोऽ-
स्तुते ॥२२९॥ अन्येषां चैव देवानां शक्रादीनां शरीरतः । लोम
निर्गतं सुमहत्तेजस्तच्चैक्यं समगच्छत ॥२३०॥ सर्वमङ्गल-
माङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके । शरण्येत्र्यम्बके गौरी नारा- दुर्गा
यणि नमोऽस्तुते ॥२३१॥ अतीव तेजसः कूटं ज्वलन्त-
मिवपर्वतम् । ददृशुस्ते सुरास्तत्रज्वाला व्याप्तदिगन्तरम् ६२

॥२३२॥ कलाकाष्ठादिरूपेण परिणामप्रदायिनि। विश्वस्यो-
परतौ शक्ते नारायणि नमोऽस्तुते ॥२३३॥ अतुलं तत्र
तत्तेजःसर्वदेवशरीरजम्। एकस्थन्तदभून्नारीव्याप्तलोकत्र-
यन्त्विषा ॥२३४॥ सर्वस्य बुद्धिरूपेण जनस्य हृदिसंस्थिते।
स्वर्गापवर्गदे देवि नारायणि नमोऽस्तुते ॥२३५॥ यद-
भूच्छाम्भवं तेजस्तेनाजायत तन्मुखम्। याम्येन चाभव-
न्केशाबाहवो विष्णुतेजसा ॥२३६॥ सर्वभूता यदा देवि
स्वर्गमुक्तिप्रदायिनी। त्वंस्तुता स्तुतये का वा भवन्तु पर-
मोक्तयः ॥२३७॥ सौम्येन स्तनयोर्युग्मं मध्यं चैन्द्रेण

चाभवत् । वारुणेन च जंघोरू नितम्बस्तेजसा भुवः ॥२३८॥
विद्याः समस्तास्तव देविभेदाः स्त्रियः समस्ताः सकला
जगत्सु । त्वयैकयापूरितमम्बयैतत्का ते स्तुतिः स्तव्यपरा-
परोक्तिः ॥२३९॥ ब्रह्मणस्तेजसा पादौ तदंगुल्योऽर्कतेजसा ।
वसूनां च करांगुल्यः कौबेरेण च नासिका ॥२४०॥ त्वं
वैष्णवीशक्तिरनन्तवीर्या विश्वस्य बीजम्परमासि माया
सम्मोहितं देवि समस्त मेतत् त्वं वै प्रसन्ना भुविमुक्तिहेतुः
॥२४१॥ तस्यास्तु दन्ताः सम्भूताः प्राजापत्येन तेजसा ।
नयनत्रितयं जज्ञे तथा पावकतेजसा ॥२४२॥ आधारभूता

जगतस्त्वमेका महीस्वरूपेण यतः स्थितासि । अपां स्वरूप-
स्थितया त्वयैत दाप्यायते कृत्स्नमलङ्घ्यवीर्ये ॥ २४३ ॥
भ्रुवौ च सन्ध्ययोस्तेजः श्रवणावनिलस्य च । अन्येषां चैव
देवानां सम्भवस्तेजसां शिवा ॥ २४४ ॥ देवि प्रपन्नार्तिहरे
प्रसीद प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य । प्रसीद विश्वेश्वरि
पाहि विश्वं त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य ॥२४५॥ ततः सम-
स्त देवानां तेजोराशिसमुद्भवाम् । तां विलोक्यमुदं प्रापुर-
मरा महिषार्दिता ॥२४६॥ देव्याहते तत्र महासुरेन्द्रे सेन्द्राः
सुरा वह्निपुरोगमास्ताम् । कात्यायनीं तुष्टुवुरिष्टलाभाद्वि-

प्रति

लोम

दुर्गा

६५

५

कासिवक्त्राब्जविकासिताशाः ॥ २४७ ॥ शूलं शूलाद्विनि-
ष्कृत्य ददौ तस्यै पिनाकधृक्। चक्रं च दत्तवान् कृष्णः
समुत्पाद्य स्वचक्रतः ॥ २४८॥ ऋषिरुवाच ॥२४९॥ शङ्खं च प्रति
वरुणः शक्तिं ददौ तस्यै हुताशनः। मारुतो दत्तवांश्चापं
बाणपूर्णे तथेषुधी ॥२५०॥ जज्वलुश्चाग्नयश्शान्ताः शान्ता- लोम
दिग्जनितस्वनाः ॥ २५१॥ वज्रमिन्द्रः समुपाद्यं कुलिशाद-
मराधिपः। ददौ तस्यै सहस्राक्षो घटामैरावतद् गजात् दुर्गा
॥ २५२॥ अवादयंस्तथैवान्ये ननृतुश्चाप्पसरोगणाः। ववुः
पुण्यास्तथा वाताः सुप्रभोऽभूद्दिवाकरः ॥२५३॥ कालदण्डाद्य ६६

मोहदण्डं पाशं चाम्बुपतिर्ददौ । प्रजापतिश्चाक्षमालां ददौ
ब्रह्मा कमण्डलुम् ।२५४। ततो देवगणाः सर्वे हर्षनिर्भर-
मानसाः । बभूवुर्निहते तस्मिन् गन्धर्वाः ललितं जगुः
।२५५।। समस्तरोमकूपेषु निजरश्मीन् दिवाकरः । कालश्च
दत्तवान् खड्गं तस्याश्चर्मचनिर्मलम् ।२५६। उत्पातमेघाः
सोल्का ये प्रागासंस्ते शमं ययुः। सरितो मार्गवाहिन्यस्तथा-
संत्रस्त पातिते । २५७ । क्षीरोदश्चामलंहार मजरे च तथा
म्बरे । चूडामणिन्तथा दिव्यं कुण्डले कटकानि च।।२५८।।
ततः प्रसन्नमखिलं हते तस्मिन्दुरात्मनि।जगत्स्वास्थ्यमती-

वाप निर्मलं चा भवन्नभः ॥ २५९ ॥ अर्धचन्द्रं तथा शुभ्रं
केयूरान्सर्वबाहुषु । नूपुरौ विमलौ तद्वद्ग्रैवेयकमनुत्तमम्
॥२६०॥ स गतासुः पपातोर्व्यां देवीशूलाग्रविक्षतः । चाल- प्रति
यन्सकलाम्पृथ्वीं साब्धिद्वीपां सपर्वताम् ॥२६१॥ अंगुली-
यकरत्नानि समस्तास्वगुंलीषु च । विश्वकर्मा ददौ तस्यै लोम
परशुं चातिनिर्मलम् ॥ २६२ ॥ तमायान्तं ततो देवी सर्व्व-
दैत्यजनेश्वरम् । जगत्यां पातयामास भित्वा शूलेन वक्षसि दुर्गा
॥२६३॥ अस्त्राण्यनेकरूपाणि तथाभेद्यं च दंशनम् । अम्लान
पंकजां मालां शिरस्युरसि चापराम् ॥२६४॥ स क्षिप्तो धरणीं ६८

प्राप्य मुष्टिमुद्यम्य वेगितः। अभ्यधावत दुष्टात्मा चण्डिका
निधनेच्छया ॥ २६५ ॥ अदद्ज्जलधिस्तस्यै पंकजं चाति-
शोभनम्। हिमवान्वाहनं सिंहं रत्नानि विविधानि च प्रति
॥ २६६ ॥ ततो नियुद्धं सुचिरं कृत्वा तेनाम्बिका सह।
उत्पात्य भ्रामयामास चिक्षेप धरणी तले ॥ २६७ ॥ ददाव- लीम
शून्यं सुरया पानपात्रं धनाधिपः। शेषश्च सर्वनागेशो महा
मणिविभूषितम् ॥२६८॥ नियुद्धं खे तदा दैत्यश्चण्डिका दुर्गा
च परस्परम्। चक्रंतु प्रथमं युद्ध मुनिविस्मयकारकम् ६६
॥२६९॥ नागहारं ददौ तस्यै धत्ते यः पृथिवीमिमाम्।

अन्यैरपि सुरैर्देवी भूषणैरायुधैस्तथा ॥ २७० ॥ उत्पत्य च
प्रगृह्योच्चैर्देवीं गगनमास्थितः । तत्रापि सा निराधारा युयुधे
तेन चण्डिका ॥ २७१ ॥ सम्मानिता निनादोच्चैः साट्टहासं
मुहुर्मुहुः । तस्यानादेन घोरेण कृत्स्नमापूरितं नभः ॥२७२॥
तलप्रहाराभिहतो निपपात महीतले । स दैत्यराजः सहसा
पुनरेव तथोत्थितः ॥२७३॥ अमायतातिमहता प्रतिशब्दो
महानभूत । चक्षुभुस्सकला लोकाः समुद्राश्च चकम्पिरे
।२७४। स मुष्टिं पातयामास हृदये दैत्यपुङ्गवः । देव्यास्तं
चापि सा देवी तलेनोरस्यताडयत ।२७५। चचाल वसुधा

चेलुः सकलाश्च महीधराः। जयेति देवाश्च मुदा तामुचुः
सिंहवाहिनीम् ॥२७६॥ चिच्छेदापततस्तस्यमुद्गरंनिशितैः
शरैः। तथापि सोऽभ्यधावत्तांमुष्टिमुद्यम्य वेगवान् ॥२७७॥
तुष्टुवुर्मुनयश्चैनां भक्तिनम्रात्ममूर्तयः। दृष्ट्वा समस्तं संक्षुब्धं
त्रैलोक्यममरारयः ॥२७८॥ हताश्वः स तदा दैत्यश्छिन्न
धन्वा विसारथिः। जग्राह मुद्गरं घोरमम्बिकानिधनोद्यत-
॥२७९॥ सन्नद्धाखिलसैन्यास्ते समुत्तस्थुरुदायुधाः। आःकि-
मेतदितिक्रोधादाभाष्य महिषासुरः ॥ २८० ॥ तस्यापतत
एवाशुखड्गं चिच्छेद चण्डिका। धनुर्मुक्तैश्शितैर्बाणैश्चर्म-

चार्कंकरामलम् ॥२८१॥ अभ्यधावत तं शब्दमशेषैरसुरैर्वृतः।
स ददर्श ततो देवीं व्याप्त लोकत्रयान्त्विषा ॥२८२॥ ततः
खड्गमुपादाय शतचन्द्रञ्च भानुमत् । अभ्यधावत्तदा देवीं
दैत्यानामधिपेश्वरः ॥२८३॥ पादाक्रान्त्यान्नतभुवं किरीटो
ल्लिखिताम्बराम् । क्षोभिताशेषपातालां धनुर्ज्यानिःस्वनेन-
ताम् ॥२८४॥ छिन्ने धनुषि दैत्येन्द्रस्तथा शक्तिमथाददे ।
चिच्छेद देवी चक्रेण तामप्यस्य करे स्थिताम् ॥२८५॥
दिशोभुजसहस्रेण समन्ताद्व्याप्य संस्थिताम् । ततः प्रव-
वृते युद्धं तया देव्याः सुरद्विषाम् ॥२८६॥ ततः शरशतैर्देवी

माच्छादयत सोऽसुरः । सापितत्कुपिता देवी धनुश्चिच्छेद
चेषुभिः ॥२८७॥ शस्त्रास्त्रैर्बहुधामुक्तैरार्दिपत दिगन्तरम् ।
महिषासुरसेनानीश्चिक्षुराख्यो महासुरः ॥ २८८ ॥ मुक्तानि
तेन चास्त्राणि दिव्यानि परमेश्वरी । बभञ्ज लीलयैवोग्र
हुङ्कारोच्चारणादिभिः ॥२८९ ॥ युयुधेः चामरश्चान्यैश्चतुरङ्ग-
बलान्वितः । रथानामयुतैः षड्भिरुदग्राख्यो महासुरः
॥ २९० ॥ दिव्यान्यस्त्राणि शतशो मुमुचेयान्यथाम्बिका ।
बभञ्ज तानि दैत्येन्द्रस्तत् प्रतीघातकर्तृभिः ॥१९१। अयु-
ध्यतायुतानाञ्च सहस्रेण महाहनुः। पञ्चाशद्भिश्च नियुतैरसि-

लोमा महासुरः ॥ २९२ ॥ शर वर्षैं शितैः शस्त्रैस्तथास्त्रश्चैव
दारुणैः। तयोर्युद्धमभूद्भूयः सर्वलोकभयंकरम् ॥२९३॥ अयु-
तानां शतैः षड्भिर्वाष्कलो युयुधेरणे । गजवाजिसहस्रौघैर- प्रति
नेकैः परिवारितः ।२९४। ततः प्रववृते युद्धं देव्याःशुम्भस्य
चोभयोः । पश्यतां सर्वदेवानामसुराणां च दारुणम् ॥२९५॥ लोम
वृतो रथानाङ्कोट्या च युद्धे तस्मिन्नयुध्यत । विडालाख्यो-
ऽयुतानाञ्च पञ्चाशद्भिरथायुतैः ।२९६। ऋषिरुवाच ॥२९७॥ दुर्गा
युयुधे संयुगे तत्र रथानां परिवारितः । अन्ये च तत्रायुतशो
रथनागहयैर्वृताः ॥१९८ ॥ अहं विभूत्या बहुभिरिह रूपै- ७४

यंदा स्थिता । तत्संहृतं मयैकैव तिष्ठम्याजौ स्थिरोभव
॥ २९९ ॥ युयुधुस्संयुतेदेव्या सहतत्र महासुराः । कोटि
कोटि सहस्त्रैस्तुरथानान्दन्तिनान्तथा ॥ ३०० ॥ देव्युवाच
॥३०१॥ हयानांच वृतोयुद्धे तत्राभून् महिषासुरः । तोमरै-
भिंन्दिपालैश्च शक्तिभिर्मुसलैस्तथा ।३०२। ततः समस्ता-
स्ता देव्यो ब्रह्माणी प्रमुखालयम् । तस्या देव्यास्तनौ जग्मु-
रेकैवासीत्तदाम्बिका ।३०३। युयुधुस्संयुगे देव्या खड्गैः परशु
पट्टिशैः । केचिच्चचिक्षपुश्शक्तीः केचित्पाशांस्तथापरे ॥३०४॥
एकैवाहं जगत्यत्र द्वितीया का ममापरा । पश्यैता दुष्ट

मय्यैव विशन्त्यो मद्विभूतयः ॥३०५॥ देवी खंगप्रहारैस्तुते-
तांहन्तुम्प्रचक्रमुः। सापि देवी ततस्तानि शस्त्राण्यस्त्राणि
चण्डिका ॥ ३०६ ॥ देव्युवाच।३०७। लीलयैव प्रचिच्छेद प्रति
निज शस्त्रास्त्र वर्षिणी। अनायस्ताननादेवीस्तूयमानासुर-
र्षिभिः ॥ ३०८॥ बलावले पादुष्टे त्वं मा दुर्गे गर्वमावह। लोम
अन्यासांबलमाश्रित्य युध्यसे याति मानिनी ॥ ३०९ ॥
मुमोचा सुरदेहेषुशस्त्राण्यस्त्राणि चेश्वरी। सोऽपिक्रुद्धो धुत- दुर्गा
सटोदेव्या वाहन केशरी। ३१०। निशुम्भं निहतं दृष्ट्वा
भ्रातरं प्राण सम्मितम्। हन्यमानं बलंचैव शुम्भः ७६

क्रुद्धोऽब्रवीद्वचः ॥३११॥ चचारा सुरसैन्येषु वनेष्विव हुता-
शनः । निश्वसान्मुमुचेयांश्च युध्यमानारणेम्बिका ॥३१२॥
ऋषिरुवाच ।३१३। त एवसद्यस्सम्भूता गणाःशत सहस्रशः। प्रति
युयुधुस्तेपरशुभिः भिंदिपालासिपट्टिशैः ॥३१४॥ केचिद्विने
शुर सुराः केचिन्नष्टा महाहवात् । भक्षिताश्चापरेकाली शिव- लोन
दूती मृगाधिपैः । ३१५ । नाशयन्तोऽसुरगणान्देवी शक्त्यु-
बृंहिताः । अवादयन्त पटहान् गणाः शङ्खास्तथा परे दुर्गा
॥३१६॥ खण्डं खण्डं च चक्रेण वैष्णव्या दानवाः कृताः
वज्रेण चैन्द्रीहस्ताग्र विमुक्तेन तथापरे ॥३१७॥ मृदंगाश्च-

तथैवान्ये तस्मिन्युद्धमहोत्सवे । ततोदेवी त्रिशूलेन गदया
शक्तिवृष्टिभिः ॥३१८॥ माहेश्वरी त्रिशूलेन भिन्नापेतुस्तथा-
परे । वाराही तुण्डघातेनकेचिच्चूर्णीकृताभुवि । ३१९।खंगा- प्रति
दिभिश्चशतशोनिजघानमहासुरान् । पातयामास चैवान्यान्
घण्टास्वनविमोहितान् ॥ ३२० ॥ कौमारीशक्तिनिर्भिन्नाः लोम
केचिन्नेशुर्महासुराः । ब्रह्माणी मन्त्रपूतेन तोयेनान्येनिरा
कृताः ॥३२१॥ असुरान्भुविपाशेन बद्ध्वाचान्यानकर्षयत् । दुर्गा
केचिद्द्विधाकृतास्तीक्ष्णैः खड्गपातैस्तथापरे ।३२२। ततः
सिंहश्चखादौग्रं दंष्ट्राक्षुण्णशिरोधरान् ।असुरांस्तांस्तथाकाली ७८

शिवदूती तथापरान् ॥३२३॥ विपोथिता निपातेन गदया-
भुवि शेरते । वेमुश्च केचिद्रुधिरं मुशलेन भृशंहताः ।३२४।
तस्य निष्कामतो देवी प्रहस्य स्वनवत्ततः । शिरश्चि- प्रति
च्छेद खंगेन ततोऽसावपतद्भुवि । ३२५ । केचिन्निपतिता
भूमौभिन्नाः शूलेन वक्षसि । निरन्तराः शरौघेण कृता लोम
केचिद्रणाजिरे ॥ ३२६ ॥ भिन्नस्य तस्य शूलेन हृद-
यान्निः सृतोऽपरः । महाबलो महावीर्यः तिष्ठेति पुरुषो दुर्गा
वदन् । ३२७ । श्येनानुकारिणः प्राणान्मुमुचुस्त्रिदशार्दनाः । ७६
केषाञ्चिद्बाहवश्छिन्नाश्छिन्नग्रीवास्तथापरे ॥३२८॥ शूलहस्तं

समायान्तं निशुम्भममरार्दनम् । हृदि विव्याध शूलेन
वेगाविद्धेन चण्डिका । ३२९ । शिरांसि पेतुरन्येषामन्ये
मध्ये विदारिताः । विच्छिन्न जङ्घास्त्वपरेपेतुर्व्याम्महासुराः प्रति
॥ ३३० ॥ तस्यापतत एवाशु गदाश्चिच्छेद चण्डिका ।
खड्गेन शितधारेण स च शूलं समाददे ॥३३१॥ एकबाह्व- लोम
क्षिचरणाः केचिद्देव्या द्विधाकृताः । छिन्नेऽपि चान्ये
शिरसि पतिताः पुनरुत्थिताः ।३३३। ततो निशुम्भो वेगेन दुर्गा
गदामादाय चण्डिकाम् । अभ्यधावत वै हन्तुं दैत्यसेना-
समावृतः ॥३३४॥ कबन्धाः युयुधुर्देव्याः गृहीत परमायुधाः । ८०

ननृतुश्चापरे तत्र युद्धे तूर्यलयाश्रिताः ॥३३४॥ ततो भग-
वती क्रुद्धा दुर्गा दुर्गार्तिनाशिनी । चिच्छेद तानि प्रति
चक्राणि स्वशरैस्सायकांश्चतान् ॥ ३३५ ॥ कबन्धाश्छिन्न
शिरसः खंगशक्त्यष्टिपाणयः । तिष्ठ तिष्ठेति भाषन्तो देवी लोम
मन्ये महासुराः ॥ ३३६ ॥ पुनश्च कृत्वाबाहूनामयुतं दनुजे-
श्वरः । चक्रायुधेन दितिजश्छादयामास चण्डिकाम् ॥३३७॥ दुर्गा
पातितैरथनागाश्वैरसुरैश्च वसुन्धरा । अगम्या सा भवत्तत्र
यत्राभूत्स महारणः ॥३३८॥ ततो निःशुम्भस्सम्प्राप्यचेतना ८१
मात्तकार्मुकः । आजघान शरैर्देवीं कालीं केसरिणं तथा ६

॥ ३३९ ॥ शोणितौघा महानद्यः सद्यस्तत्र प्रसुस्रुवुः । मध्ये चासुरसैन्यस्यं वारणासुरवाजिनाम् ॥ ३४० ॥ ततः सा चण्डिका क्रुद्धा शूलेनाभिजघानतम् । स तदाभिहतो भूमौ मूर्छितो निपपात ह ॥ ३४१॥ क्षणेन तन्महासैन्यमसुराणां तथाम्बिका । निन्ये क्षयं यथा वह्निस्तृणदारुमहाचयम् ॥३४२॥ शुम्भमुक्ताञ्छरान्देवी शुम्भस्तत्प्रहिताञ्छरान् । चिच्छेद स्वशरैरुग्रैः शतशोऽथ सहस्रसः ॥ ३४३ ॥ स च सिंहो महानादमुत्सृजन्धुतकेसरः । शरीरेभ्योऽमरारीणामसूनिव विचिन्वति ॥ ३४४ ॥ सिंहनादेन शुम्भस्य

प्रति

लोम

दुर्गा

८२

व्याप्तं लोकत्रयान्तरम् । निर्घातनिःस्वनो घोरोजितवान-
वनीपते ॥ ३४५ ॥ देव्यागणैश्चतैस्तत्रकृतं युद्धंमहासुरैः ।
यथैषांतुतुषुर्देवाः पुष्पवृष्टिमुचोदिवि ॥३४६॥ शुम्भेनागत्य प्रति
या शक्तिर्मुक्ता ज्वालातिभीषणा । आयान्ती वह्निकूटाभा
सा निरस्ता महोल्कया ॥३४७॥ ऋषिरुवाच ।३४८ । दुरा- लीम
त्मंस्तिष्ठतिष्ठेति व्याजहाराम्बिका यदा । तदा जयेत्यभि-
हितं देवैराकाशसंस्थितैः ॥३४९॥ निहन्यमानं तत्सैन्यमव- दुर्गा
लोक्य महासुरः । सेनानीश्चिक्षुरः कोपाद्ययौ योद्धुमथा-
म्बिकाम् ॥३५०॥ अट्टाट्टहासमशिवं शिवदूती चकार ह । ८३

तैश्शब्दैरसुरास्त्रेसु शुम्भः कोपं परं ययौ ॥३५१॥ स देवीं
शरवर्षेण ववर्ष समरेऽसुरः । यथा मेरुगिरेः शृङ्गन्तोयवर्षेण
तोयदः ॥ ३५२ ॥ ततः काली समुत्पत्य गगनं क्ष्मामताड- प्रति
यत् । कराभ्यां तन्निनादेन प्राक्स्वनास्ते तिरोहिताः।३५३।
तस्य छित्वा ततो देवी लीययैव शरोत्करान् । जघान तुर- लोम
गान्बाणैर्यन्तारंचैव वाजिनाम् ।३५४। ततः सिंहो महाना-
दैस्त्याजितेभ महामदैः । पूरयामास गगनं गां तथोपदि- दुर्गा
शोदश ॥३५५॥ चिच्छेद च धनुः सद्योध्वजञ्चातिसमुच्छ्रि-
तम् । विव्याध चैव गात्रेषु छिन्नधन्वानमाशुगैः ॥३५६॥ ८४

पूरयामास ककुभो निजघण्टास्वनेनच। समस्तदैत्यसैन्यानां
तेजोवधविधायिना ।३५७। सच्छिन्नधन्वा विरथो हताश्वो
हतसारथिः । अभ्यधावत तां देवीं खंगचर्मधरोऽसुरः
॥३५८॥ तमायान्तं समालोक्य देवी शङ्खमवादयत् । ज्या-
शब्दञ्चापि धनुश्चकारातीवदुःसहम् ॥ ३५९ ॥ सिंहमाहत्य
खड्गेन तीक्ष्णधारेण मूर्द्धनि । आजघान भुजे सव्ये देवी-
मप्यतिवेगवान् ।३६०। सरथस्थस्तथत्युच्चैर्गृहीतपरमायुधैः।
भुजैरष्टाभिरतुलैर्व्याप्याशेषम्बभौनभः।३६१।तस्या खड्गो-
भुजम्प्राप्यपफालनृपनन्दन । ततो जग्राह शूलं स कोपा-

दरुणलोचनः॥३६२॥ तस्मिन्निपतिते भूमौ निशुम्भे भीम
विक्रमे । भ्रातर्यतीवसंक्रुद्धः प्रययौ हन्तुमम्बिकाम्॥३६३॥
चिक्षेप च ततस्तत्तु भद्रकाल्याम्महासुरः । जाज्वल्यमा-
नन्तेजोभी रविबिम्बमिवाम्बरात् ॥ ३६४ ॥ ततः
परशुहस्तं तमायान्तं दैत्यपुंगवम् । आहत्य देवी बाणौ-
घैरपातयत भूतले॥३६५॥दृष्ट्वा तदापतच्छूलं देवी शूल-
ममुञ्चत । तच्छूलं शतधा तेन नीतं सच महासुरः ॥३६६॥
अविध्याथ गदां सोपि चिक्षेप चण्डिकां प्रति । सापि देव्या
त्रिशूलेन भिन्ना भस्मत्वमागता ॥३६७॥ हते तस्मिन्महा-

वीर्यै महिषस्य चमूपतौ । आजगाम गजारूढश्चामरस्त्रि-
दशार्दनः ॥ ३६८॥ कोपाध्मातो निशुम्भोऽथ शूलं जग्राह
दानवः । आयान्तम्मुष्टिपातेन देवी तच्चाप्यचूर्णयत् ३६९। प्रति
सोऽपिशक्तिम्मुमोचाथ देव्यास्तामम्बिकाद्रुतम् । हुङ्काराभि-
हताम्भूमौ पातयास निष्प्रभाम् ॥ ३७० ॥ छिन्ने चर्मणि लोम
खड्गे च शक्तिंचिक्षेप सोऽसुरः । तामप्यस्य द्विधाचक्रे
चक्रेणाभिमुखागताम् ॥३७१॥ भग्नां शक्तिं निपतितां दृष्ट्वा दुर्गा
क्रोधसमन्वितः । चिक्षेप चामरः शूलम्बाणैस्तदपि साच्छि-
नत् ॥ ३७२ ॥ ताडिते वाहने देवी क्षुरप्रेणासिमुत्तमम् । ८७

निशुम्भस्याशु चिच्छेद चर्म चाप्यष्टचन्द्रकम् ॥३७३॥ ततः
सिंहोसमुत्पत्य गजकुम्भान्तरे स्थितः बाहुयुद्धेन युयुधे
तेनोच्चैस्त्रिदशारिणा ॥३७४॥ निशुम्भो निहितं खड्गचर्म प्रति
चादाय सुप्रभम् । अताड़यन्मूर्ध्नि सिंहं देव्या वाहनमुत्तमम्
॥३७५॥ युद्ध्यमानौ ततःस्तौ तुतस्मान्नागान्महींगतौ । लोम
युयुधातेऽतिसंरब्धौ प्रहारैरतिदारुणैः ॥ ३७६ ॥ चिच्छेदा
ताञ्छरांस्ताभ्यां चण्डिका स्वशरोत्करैः । ताडयामास दुर्गा
चांगेषुशस्त्रौघैरसुरेश्वरौ ॥३७७॥ ततो वेगात्समुत्पत्य निपत्य
च मृगारिणा। करप्रहारेण शिरश्चामरस्य पृथक्कृतम्॥३७८॥ ८८

ततो युद्धमतीवासीद्देव्याशुम्भनिशुम्भयोः । शरवर्षमतीवोग्रं मेघयोरिव वर्षतोः ॥३७९॥ उदग्रश्च रणे देव्याः शिलावृक्षादिभिर्हतः । दन्तमुष्टितलैश्चैव करालश्च निपातितः ॥३८०॥ आजगाम महावीर्यःशुम्भोऽपि स्वबलैर्वृतः । निहन्तुं चण्डिकां कोपात्कृत्वा युद्धं तु मातृभिः ॥३८१॥ देवी क्रुद्धा गदापातैश्चूर्णयामास चोद्धतम् । वाष्कलम्भिन्दिपालेन बाणैस्ताम्रं तथान्धकम् ॥३८२॥ तस्याग्रतस्तथा पृष्ठे पार्श्वयोश्च महासुराः । सन्दष्टौष्ठपुटाः क्रुद्धा हन्तुं देवीमुपाययुः ॥३८३॥ उग्रास्यमुग्रवीर्यञ्च तथैव च महाहनुम् ।

त्रिनेत्रा च त्रिशूलेन जघान परमेश्वरी ॥३८४॥ हन्यमान-
म्महासैन्यं विलोक्यामर्षमुद्वहन् । अभ्यधावन्निशुम्भोऽथ
मुख्यया सुरसेनया ॥३८५॥ बिडालस्यासिना कायात्पा- प्रति
तयामास वै शिरः । दुर्धरं दुर्म्मुखञ्चोभौ शरैर्निन्ये यमक्ष-
यम् ॥३८६॥ चकार कोपमतुलं रक्तबीजे निपातिते । लोम
शुम्भासुरो निशुम्भश्च हतेष्वन्येषु चाहवे ॥३८७। एवं
संक्षीयमाणे तु स्वसैन्ये महिषासुरः । माहिषेण स्वरूपेण दुर्गा
त्रासयामास तान्गणान् ॥३८८॥ ऋषिरुवाच ॥३८९॥
कांश्चित्तुण्डप्रहारेण खुरक्षेपैस्तथापरान् । लाङ्गूलताडितां- ६०

श्चान्याञ्छृङ्गाभ्याञ्च विदारितान् ॥३९०॥ भूयश्चेच्छाम्यहं
श्रोतुं रक्तबीजे निपातिते । चकार शुम्भो यत्कर्म निशुम्भ-
श्चातिकोपनः ॥३९१॥ वेगेन कांश्चिदपरान्नादेन भ्रमणेन प्रति
च । निःश्वासपवनान्यान्पातयामास भूतले ॥३९२॥
विचित्रमिदमाख्यातं भगवन्भवता मम । देव्याश्चरित- लोम
माहात्म्यं रक्तबीजवधाश्रितम् ॥३९३॥ निपात्य प्रमथानी-
कमभ्यधावत सोऽसुरः । सिंहं हन्तुमहादेव्याः कोपञ्चक्रे दुर्गा
ततोऽम्बिका ॥३९४॥ राजोवाच ॥३९५॥ सोऽपि कोपा-
न्महावीर्यः खुरक्षुण्णमहीतलः । शृङ्गाभ्यांपर्वतानुच्चांश्चि- ६१

क्षेप च ननाद च ॥३९६॥ तेषांमातृगणो जातो ननर्ता
सृङ्मदोद्धतः ॥३९७॥ वेगभ्रमणविक्षुण्णा मही तस्य व्य-
शीर्यत । लाङ्गूलेनाहताश्चाब्धिः प्लावयामास सर्वतः प्रति
॥३९८॥ नीरक्तश्च महीपालरक्तबीजो महासुरः । ततस्ते
हर्षमतुलमवापुस्त्रिदशाः नृप ॥३९९॥ धुतशृङ्गविभिनाश्च- लोम
खण्डं खण्डं ययुर्घनाः । श्वासानिलास्ताः शतशो निपेते-
र्नभसोऽचलाः ॥४००॥ जघान रक्तबीजं तं चामुण्डा पीत- दुर्गा
शोणितम् । स पपात मही पृष्ठे शस्त्रसंघसमाहतः ॥४०१॥
इति क्रोधसमाध्मातमापतन्तं महासुरम् । दृष्ट्वा सा ६२

चण्डिका कोपं तद्वधायतदाकरोत् ॥४०२॥ तांश्चखादाथ
चामुंडा पपौ तस्य च शोणितम् । देवी शूलेन वज्रेण
बाणैरसिभिर्ऋष्टिभिः ॥४०३॥ सा क्षिप्त्वा तस्य वै पाशं तं
बबन्ध महासुरम् । तत्याज महिषं रूपं सोपि बद्धो महा-
मृधे ॥४०४॥ यतस्ततस्तद्वक्त्रेण चामुंडा सम्प्रतीच्छति ।
मुखे समुद्गता येऽस्यारक्तपातान्महासुराः ॥४०५॥ ततः
सिंहोऽभवत्सद्यो यावत्तस्याम्बिका शिरः । छिनत्ति तावत्पु-
रुषः खड्गःपाणिरदृश्यत ॥४०६॥ न चास्या वेदनांचक्रे
गदापातोऽल्पिकामपि । तस्याहतस्य देहात्तु बहु सुस्राव

शोणितम् ॥४०७॥ तत एवाशु पुरुषं देवी चिच्छेद सायकैः ।
तंखड्गचर्मणा साधं ततः सोऽभून्महागजः ॥४०८॥ मुखेन
काली जगृहे रक्तबीजस्य शोणितम् । ततोऽसावाजघानाथ
गदया तत्र चंडिकाम् ॥४०९॥ करेण च महासिंहं तञ्चकर्ष
जगर्ज च । कर्षतस्तु करं देवी खड्गेन निरकृन्तत ॥४१०॥
भक्ष्यमाणास्त्वया चोग्रा न चोत्पत्स्यन्ति चापरे । इत्युक्त्वा
तांततो देवी शूलेनाभिजघानतम् ॥४११॥ ततो महासुरो
भूयो माहिषं वपुरास्थितः । तयैव क्षोभयामास त्रैलोक्यं
सचराचरम् ॥४१२॥ भक्षयन्ती चरणे तदुत्पन्नान्महासुरान् ।

एवमेष क्षयं दैत्यः क्षीणरक्तो गमिष्यति ॥४१३॥ ततः क्रुद्धा
जगन्माता चंडिका पानमुत्तमम्। पपौ पुनः पुनश्चैव जहा-
सारुणलोचना ॥४१४॥ मच्छस्त्रपातसम्भूतान् रक्तबिन्दू- प्रति
न्महासुरान्। रक्तबिन्दोः प्रतीच्छ त्वं वक्त्रेणानेन वेगिना
॥४१५॥ ननर्द चासुरः सोऽपि बलवीर्यमदोद्धृतः। विषाणा लोम
भ्यांश्च चिक्षेप चंडिकां प्रति भूधरान् ॥४१६॥ तान्विषण-
णान् सुरान् दृष्ट्वा चंडिका प्राह सत्वरा। उवाच कालीं दुर्गा
चामुंडे विस्तीर्णं वदनं कुरु ॥४१७॥ सा चा तान् प्रहितां-
स्तेन चूर्णयन्ती शरोत्करैः। उवाच तन्मदोद्धूतमुखरागा-

कुलाक्षरम् ॥४१८॥ तैश्चासुरासृक्सम्भूतैरसुरैः सकलं जगत् ।
व्याप्तमासीत्ततो देवा भयामाजग्मुरुत्तमम् ॥४१९॥ देव्यु-
वाच ॥४२०॥ तस्या हतस्य बहुधा शक्तिशूलादिभिर्भुवि । प्रति
पपातयो वै रक्तौघस्तेनासञ्छतशोऽसुराः ॥४२१॥ गर्ज गर्ज
क्षणम्मूढ मधुयावत्पिवाम्यहम् । मया त्वयि हतेऽत्रैव गर्जि- लोम
ष्यन्त्याशु देवताः ॥४२२॥ स चापि गदया दैत्यः सर्वा
एवाहनत् पृथक् । मातृः कोप समाविष्टो रक्तबीजो महा- दुर्गा
सुरः ॥४२३॥ ऋषिरुवाच ॥४२४॥ शक्त्या जघान कौमारी
वाराही च तथासिना । माहेश्वरी त्रिशूलेन रक्तबीजंमहा- ६६

सुरम् ॥४२५॥ एवमुक्त्वा समुत्पत्य साऽऽरूढा तं महासुरम् ।
पादेनाक्रम्य कण्ठे च शूलेनैनमताडयत् ॥४२६॥ वैष्णवी
चक्रभिन्नस्य रुधिरस्राव सम्भवैः । सहस्रशोजगद्व्याप्तं प्रति
तत्प्रमाणर्महासुरैः ॥४२७॥ ततः सोऽपि पदाक्रान्तस्तया
निजमुखात्ततः । अर्धनिष्क्रान्त एवासीद्देव्या वीर्येण संवृतः लोम
॥४२८॥ वैष्णवी समरे चैनं चक्रेणाभिजघान ह । गदया
ताडयामास ऐन्द्री तमसुरेश्वरम् ॥४२९॥ अर्धनिष्क्रान्त दुर्गा
एवासौ युध्यमानो महासुरः । तया महासिना देव्याशिर-
श्छित्वा निपातितः ॥ ४३० ॥ पुनश्च वज्रपातेन ९७
क्षतमस्य शिरो यदा । ववाह रक्तं पुरुषास्ततो जाताः ७

सहस्रशः ॥४३१॥ ततो हाहाकृतं सर्वं दैत्यसैन्यं ननाश तत्। प्रहर्षञ्च परं जग्मुः सकला देवतागणाः ॥४३२॥ ते चापि युयुधुस्तत्र पुरुषाः रक्तसम्भवाः। समं मातृभिरत्युग्र शस्त्रपातातिभीषणम् ॥४३३॥ तुष्टुवुस्तां सुरा देवीं सह दिव्यैर्महर्षिभि। जगुर्गंधर्वपतयो ननृतुश्चाप्सरो गणाः ॥४३४॥ यावन्तः पतितास्तस्य शरीराद्रक्तबिन्दवः। तावन्तः पुरुषा जातास्तद्वीर्यबलविक्रमाः ॥४३५॥ ऋषिरुवाच ॥४३६॥ कुलिशेनाहतस्याशु बहु सुस्राव शोणितम्। समुत्तस्थुस्ततो योधास्तद्रूपास्तत्पराक्रमाः ॥४३७॥ शक्रादयः सुर-

गणानिहतेऽतिवीर्यें तस्मिन् दुरात्मनि सुराबिले च देव्या ।
तां तुष्टुवुः प्रणतिनम्रशिरोधरांसाः वाग्भिः प्रहर्षपुलकोद्गम-
चारुदेहाः ॥४३८॥ युयुधे स गदापाणिरिन्द्रशक्त्या महा- प्रति
सुरः । ततश्चैन्द्री स्ववज्रेण रक्तबीजमताडयत् ॥४३९॥
देव्या यया ततमिदं जगदात्मशक्त्या निःशेषदेवगणशक्ति- लोम
समूहमूर्त्या । तामम्बिकामखिल देवमहर्षिपूज्यां भक्त्या
नताःस्म विदधातु शुभानि सा नः ॥४४०॥ रक्तबिन्दुर्यदा दुर्गा
भूमौ पयत्यस्य शरीरतः । समुत्पतति मेदिन्य तत्प्रमाण-
स्तदासुरः ॥४४२॥ यस्याः प्रभावमतुलम्भगवाननन्तो ब्रह्मा ६६

हरश्च न हि वक्तुमलम्बलञ्च । सा चण्डिकाखिलजगत्परि-
पालनाय नाशाय चाशुभभयस्य मतिंकरोतु ॥४४२॥ पला-
यनपरान् दृष्ट्वा दैत्यान् मातृगणार्दितान्। योद्धुमभ्याययौ- प्रति
क्रुद्धोरक्तबीजो महासुरः ॥४४३॥ या श्रीः स्वयं सुकृतिनां
भवनेष्वलक्ष्मीः पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः। लोम
श्रद्धा सतां कुलजनप्रभवस्य लज्जा तां त्वां नताःस्म परि-
पालय देवि विश्वम् ॥४४४॥ इति मातृगणं क्रुद्धं मर्द- दुर्गा
यन्तम्महासुरान् । दृष्ट्वाभ्युपायैर्विविधैर्नेशुर्द्देवारिसैनिकाः
॥४४५॥ किं वर्णयाम तव रूपमचिन्त्यमेतत् किं चाति- १००

वीर्यमसुरक्षयकारि भूरि । किंचाहवेषु चरितानि तवाद्भु-
तानि सर्वेषु देव्यसुरदेवगणादिकेषु ॥४४६॥ चण्डाट्टहासैर-
सुराः शिवदूत्यभिदूषिताः । पेतुः पृथिव्याम्पतितांस्तांश्च-
खादाथ सा तदा ॥४४७॥ हेतुः समस्तजगतां त्रिगुणापि
दोषैर्न ज्ञायसे हरिहरादिभिरप्यपारा । सर्वाश्रयाखिलमिदं
जगदंशभूत मव्याकृता हि परमा प्रकृतिस्त्वमाद्या ॥४४८॥
नखैर्विदारितांश्चान्यान्भक्षयन्ती महासुरान् । नारसिंही
चचाराजौ नादापूर्णदिगम्बरा ॥४४९॥ यस्याः समस्तसुरता-
समुदीरणेन तृप्तिम्प्रयाति सकलेषु मखेषु देवि । स्वाहासि

वै पितृगणस्यचतृप्तिहेतु रुच्चार्यसे त्वमत एव जनैः स्वधा
च ॥४५०॥ तुण्डप्रहारविध्वस्ता दन्ष्ट्राग्रक्षतवक्षसः। वाराह-
मूर्त्यां न्यपतंश्चक्रेण च विदारिताः ॥४५१॥ या मुक्तिहेतु-
र्विचिन्त्य महाव्रता त्वमभ्यस्यसे सुनियतेन्द्रियतत्त्वसारैः।
मोक्षार्थिभिर्मुनिभिरस्त समस्तदोषैर्विद्यासि सा भगवती
परमा हि देवि ॥४५२॥ ऐन्द्री कुलिशपातेन शतशोदैत्य
दानवाः। पेतुर्विदारिताः पृथ्व्यां रुधिरौघप्रवर्षिणः ॥४५३॥
शब्दात्मिकासुविमलर्ग्यजुषानिधान मुद्गीथरम्यपदपाठवतां
च साम्नाम। देवी त्रयी भगवती भवभावनाय वार्ता च

प्रति

लोम

दुर्गा

१०२

सर्वंजगतां परमार्तिहन्त्री ॥४५४॥ माहेश्वरी त्रिशूलेन तथा
चक्रेण वैष्णवी । दैत्याञ्जघान कौमारी तथा शक्त्याति-
कोपना ॥४५५॥ मेधासि देवि विदिताखिलशास्त्रसारा प्रति
दुर्गासि दुर्गभवसागरनौरसङ्गा । श्रीः कैटभारिहृदयैक-
कृताधिवासा गौरी त्वमेव शशिमौलिकृतप्रतिष्ठा ॥४५६॥ लोम
कमण्डलुजलाक्षेपहतवीर्यान्हतौजसः । ब्रह्माणी चाकरोच्छ-
त्रून्येन येन स्म धावति ॥४५७॥ ईषत्सहासममलं परिपूर्ण- दुर्गा
चन्द्रबिम्बानुकारि कनकोत्तमकान्तिकान्तम् । अत्यद्भुत- १०३
म्प्रहृतमात्तरुषा तथापि वक्त्रं विलोक्य सहसा महिषासुरेण

॥४५८॥ तस्याग्रतस्तथा काली शूलपातविदारितान्।
खाट्वाङ्गपोथितांश्चारीन्कुर्वंती व्यचरत्तदा ॥४५९॥ दृष्ट्वा
तु देवि कुपितं भ्रुकुटीकरालमुद्यच्छशाङ्कसदृशच्छवि यन्न प्रति
सद्यः। प्राणान्मुमोच महिषस्तदतीव चित्रं कैर्जीव्यते हि
कुपितान्तकदर्शनेन ॥४६०॥ सा च तान्प्रहितान्वाणाञ्छूल लोम
शक्तिपरश्वधान्। चिच्छेद लीलयाध्मातधनुर्म्मुक्तैर्महेषुभिः
॥४६१॥ देवि प्रसीद परमा भवती भवाय सद्यो विनाश- दुर्गा
यसि कोपवती कुलानि। विज्ञातमेतदधुनैव यदस्तमेत-
न्नीतंबलं सुविपुलम्महिषासुरस्य॥४६२॥ ततः प्रथममेवाग्रे १०४

शरशक्त्युष्टिवृष्टिभिः । ववर्षुरुद्धतामर्षास्तां देवीममरारयः
॥४६३॥ ते सम्मता जनपदेषुधनानि तेषान्तेषां यशांसि
न च सीदति धर्मवर्गः । धन्यास्त एव निभृतात्मजभृत्य- प्रति
दारा येषां सदाभ्युदयदा भवती प्रसन्ना ॥४६४॥ तेऽपि
श्रुत्वावचो देव्याः शर्वाख्यातम्महासुराः । अमर्षापूरिता लोम
जग्मुर्यत्र कात्यायनी स्थिता ॥४६५॥ धर्म्याणि देवि
सकलानि सदैव कर्माण्यत्यादृतः प्रतिदिनं सुकृती करोति । दुर्गा
स्वर्गं प्रयाति च ततो भवती प्रसादाल्लोकत्रयेऽपि फलदा
ननुदेवि तेन ॥४६६॥ यतो नियुक्तो दौत्येन तया देव्या

शिवः स्वयम् । शिवदूतीति लोकेस्मिंस्ततः सा ख्याति-
मागता ॥४६७॥ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः
स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि । दारिद्र्यदुःखभयहारिणि प्रति
का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता ॥४६८। बला
वलेपादथचेद्भवन्तो युद्धकांक्षिणः । तदागच्छत तृप्यन्तु लोन
मच्छिवाः पिशितेन वा ॥४६९॥ एभिर्हतैर्जगदुपैति सुख-
मत्तथैते कुर्वन्तु नाम नरकाय चिराय पापम् । संग्राममृत्यु- दुर्गा
मधिगम्य दिवम्प्रयान्तु मत्वेति नूनमहितान्विनिहंसि
देवि ॥४७०॥ त्रैलोक्यमिन्द्रो लभतां देवाः सन्तु हविर्भुजः । १०६

यूयं प्रयात पातालं यदि जीवितुमिच्छथ ॥४७१॥ दृष्ट्वैव
किंन भवती प्रकरोति भस्म सर्वासुरानरिषु यत्प्रहिणोऽषि
शस्त्रम् । लोकान्प्रयान्तु रिपवोऽपि हि शस्त्रपूता इत्थम्मति- प्रति
र्भवति तेष्वपि तेऽतिसाध्वी ॥४७२॥ ब्रूहि शुम्भं निशुम्भं
च दानवावतिगर्वितौ । ये चान्ये दानवास्तत्र युद्धाय समु- लोम
पस्थिताः ॥४७३॥ खड्गप्रभानिकरविस्फुरणैस्तथोग्रैः शूला-
ग्रकान्ति निवहेन दृशोऽसुराणाम् । यन्नागताविलयमंशु- दुर्गा
मदिन्दुखण्ड योग्यानंतव विलोकयतांतदेतत् ॥४७४॥ १०७
सा चाह धूम्रजटिल मीशानमपराजिता । दूत त्वं गच्छ

भगवन् पार्श्वं शुम्भ निशुम्भयोः ॥४७५॥ दुर्वृत्तवृत्तशमनं
तव देवि शीलं रूपं तथैतदविचिन्त्यमतुल्य मन्यैः। वीर्यं
च हन्तृहृतदेवपराक्रमाणां वैरिष्वपि प्रकटितैव दया त्वये- प्रति
त्थम् ॥४७६॥ ततो देवीशरीरात्तु विनिष्क्रान्तातिभीषणा।
चण्डिकाशक्तिरत्युग्रा शिवा शतनिनादिनी ॥४७७॥ केनो- लोम
पमा भवतु तेऽस्य पराक्रमस्य रूपं च शत्रुभयकार्यतिहारि-
कुत्र। चित्ते कृपा समरनिष्ठुरता च दृष्टा त्वय्येव देवि वरदे दुर्गा
भुवनत्रयेऽपि ॥४७८॥ ततः परिवृतस्ताभिरीशानो देव-
शक्तिभिः। हन्यन्तामसुराः शीघ्रं मम प्रीत्याऽह चण्डिकाम् १०८

॥४७९॥ त्रैलोक्यमेतदखिलं रिपुनाशनेन त्रातं त्वया समर-
मूर्द्धनि तेपि हत्वा। नीता दिवं रिपुगणा भयमप्यपास्तमस्मा-
कमुन्मदसुरारिभवं नमस्ते ॥४८०॥ वज्रहस्ता तथैवैन्द्री
गजराजोपरिस्थिता। प्राप्ता सहस्र नयना यथा शक्रस्त-
थैवसा ॥४८१॥ शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके।
घटास्वनेन नः पाहिचापज्यानिःस्वनेन च ॥४८२॥ नार-
सिंहीं नृसिंहस्य बिभ्रती सदृशं वपुः। प्राप्ता तत्र सटाक्षे-
पक्षिप्तनक्षत्रसंहतिः ॥४८३॥ प्राच्यां रक्ष प्रतीच्याञ्च

चण्डिके रक्ष दक्षिणे। भ्राणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथै-
श्वरि ॥४८४॥ यज्ञवाराहमतुलं रूपं या बिभ्रतो हरेः।
शक्तिः साप्यायययौ तत्र वाराहीं बिभ्रती तनुम् ॥४८५॥
सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते। यानि
चात्यर्थघोराणि तैरक्षास्मांस्तथा भुवम् ॥४८६॥ तथैव
वैष्णवी शक्तिर्गरुडोपरि संस्थिता। शङ्खचक्रगदाशार्ङ्ग-
खड्गहस्ताभ्युपाययौ ॥ ४८७॥ खड्गशूलगदादीनि यानि
चास्त्राणि तेऽम्बिके। करपल्लवसङ्गीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः

४८८॥ कौमारी शक्तिहस्ता च मयूरवरवाहना। योद्धु-
मभ्याययौ दैत्यानम्बिका गुहरूपिणी ॥४८९॥ ऋषिरुवाच
॥४९०॥ माहेश्वरी वृषा रूढ़ा त्रिशूल वरधारिणी। महा-
हिवलया प्राप्ता चन्द्ररेखाविभूषणा ॥४९१॥ एवं स्तुता सुरै-
र्दिव्यैः कुसुमैर्नन्दनोद्भवैः। अर्चिता जगतां धात्री तथा
गन्धानुलेपनैः ॥४९२॥ हंसयुक्तविमानाग्रे साक्षसूत्रकमण-
डलुः। आयाता ब्रह्मणः शक्तिर्ब्रह्माणी साभिधीयते ॥४९३॥
भक्त्या समस्तैस्त्रिदशैर्दिव्यैर्धूपैस्तुधूपिता। प्राह प्रसादसु-
मुखी समस्तान्प्रणतान् सुरान् ॥४९४॥ यस्य देवस्य यद्रूपं

यथा भूषणवाहनम् । तद्वद्देवहितच्छक्तिरसुरान्योद्धुमाययौ
॥४९५॥ देव्युवाच ॥४९६॥ ब्रह्मेशगुहविष्णूनां तथेन्द्रस्य च
शक्तयः । शरीरेभ्यो विनिष्क्रम्य तद्रूपैश्चण्डिकां ययुः॥४९७॥ प्रति
व्रियतां त्रिदशाःसर्वे यदस्मत्तोऽभिवाञ्छितम् ॥४९८॥
एतस्मिन्नन्तरे भूप विनाशाय सुरद्विषाम् । भवायामरसिंहा- लोम
नामतिवीर्यबलान्विताः ॥४९९॥ देवाऊचुः ॥५००॥ तन्नि-
नादमुपश्रुत्य दैत्यसैन्यैश्चतुर्दिशम् । देवीसिंहस्तथा काली दुर्गा
सरोषैः परिवारिताः ॥५०१॥ भगवत्या कृतं सर्वं न किंचिद-
वशिष्यते ॥५०२॥ धनुर्ज्यासिंहघंटानां नादापूरितदिङ्- ११२

मुखा। निनादैर्भीषणैः काली जिग्ये विस्तारिताननना
॥५०४॥ यदयन्निहतः शत्रुरस्माकम्महिषासुरः। यदि चापि
वरो देयस्त्वयास्माकं महेश्वरि ॥५०४॥ ततः सिंहो महा-
नादमतीवकृतवान् नृप। घण्टास्वनेन तन्नादमम्बिका
चोपबृंहयत् ॥५०५॥ संस्मृता संस्मृता त्वं नो हिंसेथा
परमापदः। यश्चमर्त्यः स्तवैरेभिस्त्वां स्तोष्यत्यमलानने
॥५०६॥ आयान्तञ्चण्डिका दृष्ट्वा तत्सैन्यमतिभीषणम्।
ज्यास्वनैः पूरयामास धरणीगगनान्तरम् ॥५०७॥ तस्य
वित्तर्द्धिविभवैर्द्धनदारादिसम्पदाम्। वृद्धयेऽस्मत्प्रसन्ना त्वं

प्रति
लोम
दुर्गा
११३
८

भवेथाःसर्वदाम्बिके ॥५०८॥ इत्याज्ञाप्यासुरपतिः शुम्भो
भैरवशासनः । निर्जगाम महासैन्यसहस्त्रैर्बहुभिर्वृतः॥५०९॥
ऋषिरुवाच ॥५१०॥ कालका दौर्हृदामौर्याः कालकेयास्त- प्रति
थासुराः । युद्धाय सज्जा निर्यान्तु आज्ञया त्वरिता मम
॥५११॥इति प्रसादिता देवैर्जगतोऽर्थे तथाऽऽत्मनः तथेत्यु- लोम
क्त्वा भद्रकाली बभूवान्तर्हिता नृप ॥५१२॥ कोटिवीर्याणि
पञ्चाशदसुराणां कुलानि वैं । शतं कुलानि धौम्राणां निर्ग- दुर्गा
च्छन्तु ममाज्ञया ॥५१३॥ इत्येतत्कथितं भूप सम्भूता सा
यथा पुरा । देवीदेवशरीरेभ्यो जगत्त्रयहितैषिणी ॥५१४॥ ११४

अद्य सर्वबलैर्दैत्याः षडशीतिरुदायुधाः । कम्बूनाञ्चतुरशी-
तिर्निर्यान्तु स्वबलैर्वृताः ॥५१५॥ पुनश्च गौरीदेहात्सा समुद्भूता
यथा भवत् । वधाय दुष्टदैत्यानां तथा शुम्भ निशुम्भयोः प्रति
॥५१६॥ ततः कोपपराधीनचेताश्शुम्भः प्रतापवान् । उद्योगं
सर्वसैन्यानां दैत्यानामादिदेश ह ॥५१७॥ रक्षणाय च लोम
लोकानां देवानामुपकारिणी । तच्छृणुष्व मयाऽऽख्यातं
यथावत् कथयामि ते ॥५१८॥ चण्डे च निहते दैत्ये मुण्डे च दुर्गा
विनिपातिते । बहुलेषु च सैन्येषु क्षयितेष्वसुरेश्वरः ॥५१९॥ ११५
ॐ ऋषिरुवाच ॥५२०॥ ॐ क्ली ऋषिरुवाच ॥५२१॥ पुरा

शुम्भ निशुम्भाभ्यामसुराभ्यां शचीपतेः । त्रैलोक्यं यज्ञभा-
गाश्च हृता मदबलाश्रयात् ॥५२२॥ यस्माच्चण्डञ्च मुण्डञ्च-
गृहीत्वा त्वमुपागता । चामुण्डेति ततो लोके ख्याता देवि प्रति
भविष्यसि ॥५२३॥ तावेव सूर्यतान्तद्वदधिकारन्तथैन्दवम् ।
कौबेरमथ याम्यं च चक्राते वरुणस्य च ॥५२४॥ तवानीतौ लोम
ततो दृष्ट्वा चण्डमुण्डौ महासुरौ । उवाच कालीं कल्याणी
ललितं चण्डिका वचः ॥५२५॥ तावेव पवनर्द्धिञ्च चक्रतु- दुर्गा
र्वह्निकर्मंच । ततो देवाविनिर्धूताभ्रष्टराज्याः पराजिताः
॥५२६॥ ऋषिरुवाच ॥५२७॥ हृताधिकारास्त्रिदशास्ताभ्यां

सर्वे निराकृताः । महासुराभ्यां तांदेवीं संस्मरन्त्यपराजि-
ताम् ॥५२८॥ मया तवात्रोपहृतौ चण्डमुण्डौ महापशू ।
युद्धयज्ञे स्वयं शुम्भं निशुम्भं च हनिष्यसि ॥५२९॥ तया-
स्माकं वरोदत्तो यथाऽऽपत्सुस्मृताखिलाः । भवतां नाशयि-
ष्यामि तत्क्षणात्परमापदः ॥५३०॥ शिरश्चण्डस्य काली
च गृहीत्वामुण्डमेव च । प्राह प्रचण्डाट्टहास मिश्रमभ्येत्य
चण्डिकाम् ॥५३१॥ इतिकृत्वामतिदेवा हिमवन्तं नगेश्वरम् ।
जग्मुस्तत्र ततोदेवीं विष्णुमायांप्रतुष्टुवुः ॥५३२॥ हतशेषं
ततः सैन्यं दृष्ट्वा चण्डं निपातितम् । मुण्डं च सुमहावीर्यं

प्रति लोम दुर्गा ११७

दिशोभेजेभयातुरम् ॥५३३॥ देवाऊचुः ॥५३४॥ अथ मुण्डो-
ऽभ्यधावत्तां दृष्ट्वा चण्डं निपातितम् । तमप्यपातयद्भूमौ
सा खड्गाभिहतं रुषा ॥५३५॥ नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै
सततं नमः । नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्मताम्
॥५२६॥ उत्थाय च महासिंहं देवी चण्डमधावत । गृहीत्वा
चास्यकेशेषु शिरस्तेनासिनाच्छिनत् ॥५३७॥ रौद्रायै नमो
नित्यायै गौर्यै धात्यै नमोनमः । ज्योत्स्नायैचेन्दुरूपिण्यै
सुखायै सतततंनमः ॥५३८॥ ततो जहासातिरुषा भीमंभैरव-
नादिनी । कालीकरालवक्त्रान्तर्दुर्दर्शदशनोज्ज्वला ॥५३९॥

कल्याण्यै प्रणतां वृद्ध्यै सिद्ध्यै कुर्मो नमोनमः । नैर्ऋत्यै
भूभृतांलक्ष्म्यै शर्वाण्यै ते नमोनमः ॥५४०॥ तानि चक्रा-
ण्यनेकानि विशमानानि तन्मुखम् बभुर्यथार्कबिम्बानि प्रति
सुबहूनि घनोदरं ॥५४१॥ दुर्गायै दुर्गपारायै सारायै सर्व-
कारिण्यै । ख्यात्यै तथैव कृष्णायै धूम्रायै सततन्नमः लोम
॥५४२॥ शरवर्षैर्महाभीमैर्भीमाक्षीं तां महासुरः । छादया-
मास चक्रैश्च मुण्डः क्षिप्तैः सहस्रशः ॥५४३॥ अतिसौम्याा- दुर्गा
तिरौद्रायै नतास्तस्यै नमोनमः । नमो जगत्प्रतिष्ठायै देव्यै
कृत्यै नमोनमः ॥५४४॥ क्षणेन तद्बलं सर्वमसुराणां ११६

निपातितम् । दृष्ट्वा चण्डोऽभिदुद्राव तां कालीमतिभीष-
णाम् ॥५४५॥ या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता
नमस्तस्यै ॥५४६॥ असिनानिहताः केचित्केचित्खट्वाङ्गता- प्रति
डिताः । जग्मुर्विनाशमसुरा दन्ताग्राभिहतास्तथा ॥५४७॥
नमस्तस्यै ॥५४८॥ बलिनांतद्बलं सर्वमसुराणान्दुरात्मनाम् । लोन
ममर्दाभक्षयच्चान्यानन्यांश्चाताडयत्तथा ॥५४९॥ नमस्तस्यै
नमोनमः ॥५५०॥ तैर्मुक्तानि च शस्त्राणि महास्त्राणि तथा- दुर्गा
सुरैः । मुखेन जग्राह रुषा दशनैर्मथितान्यपि ॥५५१॥ या
देवी सर्वभूतेषु चेतनेत्यभिधीयते । नमस्तस्यै ॥५५२॥ १२०

एकं जग्राह केशेषु ग्रीवायामथ चापरम् । पादेनाक्रम्य
चैवान्यमुरसान्यमपोथयत् ॥५५३॥ नमस्तस्यै ॥५५४॥
तथैव योधं तुरगैरथं सारथिना सह । निक्षिप्य वक्त्रे दश-
नैश्चर्वयन्त्यतिभैरवम् ॥५५५॥ नमस्तस्यै नमोनमः ॥५५६॥
पार्ष्णिग्राहांकुशग्राहियोधघण्टासमन्वितान् । समादायैकह-
स्तेन मुखेचिक्षेपवारणान् ॥५५७॥ या देवी सर्वभूतेषु बुद्धि-
रूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥५५८॥ सा वेगेनाभिपतिता
घातयन्ती महासुरान् । सैन्ये तत्र सुरारीणामभक्षयत् तद्-
बलम् ॥५५९॥ नमस्तस्यै ॥५६०॥ अतिविस्तारवदना जिह्वा-

ललन भीषणा । निमग्ना रक्तनयना नादापूरितदिङ्मुखा
॥५६१॥ नमस्तस्यै नमोनमः ॥५६२॥ विचित्रखट्वाङ्गधरा
नरमालाविभूषणा । द्वीपिचर्मपरीधाना शुष्कमांसातिभैरवा प्रति
॥५६३॥ या देवी सर्वभूतेषु निद्रारूपेण संस्थिता । नमस्त-
स्यै ॥५६४॥ भ्रुकुटीकुटिलात्तस्या ललाटफलकाद्द्रुतम् । लीम
काली करालवदना विनिष्क्रान्तासिपाशिनी ॥५६५॥ नम-
स्तस्यै ॥५६६॥ ततः कोपञ्चकारोच्चैरंबिका तानरीन्प्रति । दुर्गा
कोपेन चास्या वदनम्मषीवर्णमभूत्तदा ॥५६७॥ नमस्तस्यै
नमोनमः ॥५६८॥ ते दृष्ट्वा तां समादातुमुद्यमंचक्र रुद्यताः। १२२

आकृष्टचापासिधरास्तथान्ये तत्समीपगाः ॥५६९॥ या देवी
सर्वभूतेषु क्षुधारूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥५७०॥ ददृ-
शुस्ते ततो देवीमीषद्धासां व्यवस्थिताम् । सिंहस्योपरि प्रति
शैलेन्द्रश्रृंगे महति काञ्चने ॥५७१॥ नमस्तस्यै ॥५७२॥
आज्ञाप्तास्ते ततो दैत्याश्चण्डमुण्डपुरोगमाः । चतुरंग लोम
बलोपेता ययुरभ्युद्यतायुधाः ॥५७३॥ नमस्तस्यै नमोनमः
॥५७४॥ ऋषिरुवाच॥५७५। या देवी सर्वभूतेषु च्छायारूपेण दुर्गा
संस्थिता । नमस्तस्यै ॥५७६॥ तस्यां हतायां दुष्टायां सिंहे
च विनिपातिते। शीघ्रमागम्यतां बद्ध्वा गृहीत्वा तामथा-

म्बिकाम् ॥५७७। नमस्तस्यै ॥५७८॥ केशेष्वाकृष्य बद्ध्वा
वा यदि वः संशयो युधि। तदा शेषायुधैः सर्वैरसुरैर्विनिह-
न्यताम् ॥५७९॥ नमस्तस्यै नमोनमः ॥५८०॥ हे चण्ड हे
मुण्ड बलैर्बहुभिः परिवारितौ। तत्र गच्छत गत्वा च सा समा-
नीयतांलघु॥५८१॥ या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै ॥५८२॥ चुकोप दैत्याधिपतिः शुम्भः प्रस्फुरिता-
धरः। आज्ञापयामास च तौ चण्डमुण्डौ महासुरौ ॥५८३॥
नमस्तस्यै ॥५८४॥ श्रुत्वातमसुरं देव्या निहतं धूम्रलोच-
नम्। बलञ्च क्षयितं कृत्स्नं देवी केसरिणा ततः ॥५८५॥

नमस्तास्यै नमोनमः ॥५८६॥ क्षणेन तद्बलं सर्वं क्षयं नीतं
महात्मना । तेन केसरिणा देव्या वाहनेनातिकोपिना
॥५८७॥ या देवी सर्वभूतेषु तृष्णारूपेण संस्थिता ॥ नमस्त- प्रति
स्यै ॥५८८॥ विच्छिन्नबाहुशिरसः कृतास्तेन तथापरे ।
पपौ च रुधिरं कोष्ठादन्येषान्धुतकेसरः ॥५८९॥ नम- लोम
स्तस्यै ॥५९०॥ केषञ्चित्पाटयामास नखैः कोष्ठानि
केसरी । तथा तलप्रहारेण शिरांसि कृतवान् पृथक् ॥५९१॥ दुर्गा
नमस्तस्यै नमोनमः ॥५९२॥ कांश्चित् करप्रहारेण दैत्याना-
स्येन चापरान् । आक्रम्य चाधरेणान्यान् स जघान महा-

सुरान् ॥५९३॥ या देवी सर्वभूतेषु क्षान्तिरूपेण संस्थिता ।

नमस्तस्यै ॥५९४॥ ततो धुतसटः कोपात्कृत्वा नादं सुभै-
रवम् । पपातासुरसेनायां सिंहो देव्याः स्ववाहनः ॥५९५॥
नमस्तस्यै ॥५९६॥ अथ क्रुद्धं महासैन्यमसुराणां तथा- प्रति
म्बिका ववर्ष सायकैस्तीक्ष्णैस्तथा शक्तिपरश्वधैः ॥५९७॥
नमस्तस्यै नमोनमः ॥५९८॥ इत्युक्तःसोऽभ्यधावत्तामसुरो लोम
धूम्रलोचनः । हुङ्कारेणैव तंभस्म सा चकाराम्बिका ततः
॥५९९॥ या देवी सर्वभूतेषु जातिरूपेण संस्थिता । नम- दुर्गा
स्तस्यै ॥६००॥ ऋषिरुवाच ॥६०१॥ नमस्तस्यै ॥६०२॥
दैत्येश्वरेण प्रहितो बलवान् बलसवृतः । बलान्नयसि मामेवं १२६

ततः किन्ते करोम्यहम् ।६०३॥ नमस्तस्यै नमोनमः
॥६०४॥ देव्युवाच ॥६०५॥ या देवी सर्वभूतेषु लज्जारूपेण
संस्थिता । नमस्तस्यै ॥६०६॥ न चेत्प्रीत्याद्य भवती मद्भ-
र्तारमुपैष्यति । ततोबलान्नयाम्येष केशाकर्षणविह्वलाम्
॥६०७॥ नमस्तस्यै ॥६०८॥ स दृष्ट्वा तां ततो देवी तुहि-
नाचलसंस्थिताम् । जगादोच्चैः प्रयाहीति मूलं शुम्भनिशु-
म्भयोः ॥६०९॥ नमस्तस्यै नमोनमः ॥६१०॥ तेनज्ञास-
स्ततः शीघ्रं स दैत्यो धूम्रलोचनः । वृतः षष्ट्या सहस्रा-
णामसुराणां द्रुतंययौ ॥६११॥ या देवी सर्वभूतेषु शान्ति-

रूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै ॥६१२॥ ऋषिरुवाच ॥६१३॥
नमस्तस्यै ॥६१४॥ तत्परित्राणदः कश्चिद्यदि वोत्तिष्ठतेऽपरः।
स हन्तव्योऽमरोवापि यक्षो गन्धर्व एव वा ॥६१५॥ नमस्तस्यै
नमोनमः ॥६१६॥ हे धूम्रलोचनाशु त्वं स्वसैन्यपरिवारितः।
तामानय बलाद्दुष्टां केशाकर्षणविह्वलाम् ॥६१७॥ या देवी
सर्वभूतेषु श्रद्धारूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै ॥६१८॥ तस्य
दूतस्य तद्वाक्यमाकर्ण्यासुरराट् ततः। सक्रोधः प्राह दैत्या-
नामधिपं धूम्रलोचनम् ॥६१९॥ नमस्तस्यै ॥६२०॥ इत्या-
कर्ण्य वचो देव्याः स दूतोऽमर्षपूरितः। समाचष्ट समा

गम्य दैत्यराजाय विस्तरात् ॥६२१॥ नमस्तस्यै नमोनमः ॥६२२॥ ऋषिरुवाच ॥६२३॥ या देवी सर्वभूतेषु कान्ति-रूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै ॥६२४॥ स त्वं गच्छ मयो-क्तन्ते यदेतत्सर्वमाहृतः। तदाचक्ष्वाऽसुरेन्द्राय स च युक्तं-करोतु तत् ॥६२५॥ नमस्तस्यै॥६२६॥ एवमेतद्बली शुम्भो निशुम्भश्चातिवीर्यवान्। किङ्करोमि प्रतिज्ञा मे यदना-लोचिता पुरा ॥६२७॥ नमस्तस्यै नमोनमः ॥६२८॥ देव्यु-वाच ॥६२९॥ या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मीरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै ॥६३०॥ सा त्वं गच्छ मयैवोक्ता पार्श्वं शुम्भ निशुम्भयोः। केशाकर्षणनिर्धूतगौरवा मा गमिष्यसि

प्रति

लोम

दुर्गा

१२६

।६३१। नमस्तस्यै ।६३२। इन्द्राद्याःसकला देवास्तस्थु-
र्येषां न संयुगे । शुम्भादीनां कथन्तेषां स्त्री प्रयास्यसि
सम्मुखम् ।६३३। नमस्तस्यै नमोनमः ।६३४। अन्येषा-
मपि दैत्यानां सर्वे देवा नवै युधि । तिष्ठन्ति सम्मुखे देवि
किं पुनः स्त्री त्वमेकिका ।६३५। या देवी सर्वभूतेषु वृत्ति-
रूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै ॥३३६॥ अवलिप्तासि मैवं
त्वं देवि ब्रूहि ममाग्रतः । त्रैलोक्ये कः पुमांस्तिष्ठेदग्रे शुम्भ
निशुम्भयोः ॥६३७॥ नमस्तस्यै ॥६३८॥ दूत उवाच
।६३९। नमस्तस्यै नमोनमः ॥६४०॥ तदागच्छतु शुम्भो-
ऽत्र निशुम्भो वा महासुरः । मां जित्वा किं चिरेणात्र पाणिं

गृह्णातु मे लघु ॥६४१॥ या देवी सर्वभूतेषु स्मृतिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै ॥६४२॥ यो मां जयति संग्रामे यो मे दर्पं व्यपोहति। यो मे प्रतिबलो लोके स मे भर्ता भविष्यति ॥६४३॥ नमस्तस्यै ॥६४४॥ किन्त्वत्र यत्प्रतिज्ञातं मिथ्या तत्क्रियते कथम् श्रूयतामल्पबुद्धि-त्वात्प्रतिज्ञा या कृतापुरा ॥६४५॥ नमस्तस्यै नमोनमः ॥६४६॥ सत्यमुक्तं त्वया नात्र मिथ्या किञ्चित्त्वयोदितम्। त्रैलोक्याधिपतिः शुम्भो निशुम्भश्चापि तादृशः ॥६४७॥ या देवी सर्वभूतेषु दयारूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै ॥६४८॥ देव्युवाच ॥६४९॥ नमस्तयै ॥६५०॥ इत्युक्ता सा तदा

देवी गम्भीरान्तःस्मिता जगौ । दुर्गा भगवती भद्रा ययेदं
धार्यते जगत् ॥६५१॥ नमस्तस्यै नमोनमः ॥६५२॥ ऋषि-
रुवाच ॥६५३। या देवी सर्वभूतेषु तुष्टिरूपेण संस्थिता । प्रति
नमस्तस्यै ॥६५४॥ परमैश्वर्यमतुलम्प्राप्स्यतेमत्परिग्रहात् ।
एतद्बुद्ध्या समालोच्य मत्परिग्रहतां ब्रज ॥६५५॥ नम-
स्तस्यै ॥६५६॥ मां वा ममानुजं वापि निशुम्भमुरुविक्र- लोम
मम् । भजत्वंचञ्चलापाङ्गि रत्नभूतासि वै यतः ॥६५७॥
नमस्तस्यै नमोनमः ॥६५८॥ स्त्री रत्नभूता त्वां देवि लोके दुर्गा
मन्यामहे वयम् । सात्वमस्मानुपागच्छ यतो रत्नभुजो
वयम् ॥६५९॥ या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता । १३२

नमस्तस्य ॥६६०॥ यानि चान्यानि देवेषु गन्धर्वेषूरगेषु च।
रत्नभूतानि भूतानि तानि मय्येव शोभने ॥६६१॥ नमस्त-
स्यै॥६६२॥ क्षीरोदमथनोद्भूतमश्वरत्नम्ममामरैः । उच्चैश्श्र-
वससंज्ञं तत्प्रणिपत्य समर्पितम् ॥६६३॥ नमस्तस्यै नमो-
नमः ॥६६४॥ त्रैलोक्ये वररत्नानि मम वश्यान्यशेषतः ।
तथैव गजरत्नं च हृत्वा देवेन्द्रवाहनम् ॥६६५॥ या देवी
सर्वभूतेषु भ्रान्तिरूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै ॥६६६॥ मम
त्रैलोक्यमखि म देवा वशानुगाः । यज्ञभागानहं सर्वा-
नुपाश्नामि पृथक् पृथक् ॥६६७॥ नमस्तस्यै ॥६६८॥
अव्याहताज्ञः सर्वासु यः यदा देवयोनिषु । निर्जिताखिल-

दैत्यारिः स यदाह शृणुष्व तत् ॥६६९॥ नमस्तस्यै नमो-
नमः ॥६७०॥ देवि दैत्येश्वरः शुम्भस्त्रैलोक्ये परमेश्वरः ।
दूतोऽहम्प्रेषितस्तेन त्वत्सकाशमिहागतः ॥६७१॥ इन्द्रिया- प्रति
णामधिष्ठात्री भूतानांचाखिलेषु या । भूतेषु सततं तस्यै
व्याप्तिदेव्यै नमोनमः॥६७२॥ देव्युवाच॥६७३॥ चितिरूपेण लोम
याकृत्स्नमेतद्व्याप्यस्थिता जगत् । नमस्तस्यै ॥६७४॥ स
तत्र गत्वा यत्रास्ते शैलोद्देशेऽतिशोभने। सा देवी तान्ततः
प्राह श्लक्ष्णंमधुरया गिरा ॥६७५॥ नमस्तस्यै ॥६७६॥ इति दुर्गा
चेति च वक्तव्या सागत्वा वचनान्मम । यथा चाभ्येति
सम्प्रीत्या तथा कार्यं त्वया लघु ॥६७७॥ नमस्तस्यै नमो- १३४

नमः ॥६७८॥ निशम्येति वचः शुम्भः स तदा चण्ड-
मुण्डयोः । प्रेषयामास सुग्रीवं दूतं दे०। महासुरम् ॥६७९॥
स्तुता सुरैः पूर्वमभीष्टसंश्रयात्तथासुरेन्द्रेण दिनेषु सेविता ।
करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः
॥६८०॥ ऋषिरुवाच ॥६८१॥ या साम्प्रतंचोद्धतदैत्यता-
पितैरस्माभिरीशा च सुरैर्नमस्यते ॥ या च स्मृता तत्क्षण-
मेव हन्ति नः सर्वापदो भक्तिविनम्रमूर्तिभिः ॥६८२॥ एवं
दैत्येन्द्र रत्नानि समस्तान्याहृतानि ते। स्त्रीरत्नमेषा कल्याणी
त्वया कस्मान्न गृह्यते ॥६८३॥ ऋषिरुवाच ॥६८४॥ निशु-

म्भस्याब्धिजाताश्च समस्ता रत्नजातयः । वह्निरपि ददौ

तुभ्यमग्निशौचे च वाससी ॥६८५॥ एवं स्तवादियुक्तानां
देवानान्तत्र पार्वती। स्नातुमभ्याययौ तोये जाह्नव्या
नृपनन्दन ॥६८६॥ मृत्योरुत्क्रान्तिदा नाम शक्तिरीशत्वया
हृता। पाशः सलिलराजस्य भ्रातुस्तव परिग्रहे ॥६८७॥ प्रति
साब्रवीत्तान् सुरान् सुभ्रूर्भवद्भिः स्तूयतेऽत्र का। शरीर-
कोशतश्चास्याः समुद्भूताब्रवीच्छिवा ॥६८८॥ छत्रन्ते वारु- लोम
णङ्गृहे काञ्चनश्चावि तिष्ठति। तथायं स्यन्दनवरो यः पुरा-
ऽऽसीत्प्रजापतेः ॥६८९॥ स्तोत्रम्ममैतत् क्रियते शुम्भदैत्य- दुर्गा
निराकृतैः। देवैःसमेतेसमरे निशुम्भेन पराजितैः ॥६९०॥
निधिरेष महापद्मः समानीतो धनेश्वरात्। किंजल्किनीं १३६

ददौ चाब्धिर्मालामम्लानपङ्कजाम् ॥६९१॥ शरीरकोशा-
द्यत्तस्याः पार्वत्या निःसृताम्बिका । कौशिकीति समस्तेषु
ततो लोकेषु गीयते ॥६९२॥ विमानं हंससंयुक्तमेतत्तिष्ठति प्रति
तेऽङ्गणे । रत्नभूतमिहानीतं यदासीद्वेधसोऽद्भुतम् ॥६९३॥
तस्यां विनिर्गतायांत्तु कृष्णाभूत्सापि पार्वती । कालिके- लोम
तिसमाख्याता हिमाचलकृताश्रया ॥६९४॥ ऐरावतः समा-
नीतो गजरत्नं पुरन्दरात् । पारिजाततरुश्चायं तथैवोच्चैः
श्रवाहयः ॥६९५॥ ततोऽम्बिकां परं रूपम्बिभ्राणां सुमनो- दुर्गा
हरम् । ददर्शचण्डो मुण्डश्च भृत्यौ शुम्भ निशुम्भयोः
॥६९६॥ यानिरत्नानि मणयो गजाश्वादीनि वै प्रभो ।

त्रैलोक्ये तु समस्तानि साम्प्रतं भान्ति ते गृहे ॥६९७॥
ताभ्यां शुम्भाय चाख्याता अतीव सुमनोहरा । काप्यास्ते
स्त्री महाराज भासयन्ती हिमाचलम् ॥६९८॥ स्त्रीरत्नमति- प्रति
चार्वङ्गी द्योतयन्ती दिशास्त्विषा । सा तु तिष्ठति दैत्येन्द्र
तांभवान्द्रष्टु मर्हति ॥६९९॥ नैव तादृक् क्वचिद्रूपं दृष्टं लोम
केनचिदुत्तमम् । ज्ञायतां काप्यसौ देवी गृह्यतां चासुरे-
श्वर ॥७००॥ दुर्गा

ॐ तत्सत् मार्कण्डेय पुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवी
माहात्म्ये अध्याय देवतायै नमोनमः ॥

अक्षर न्यासं कुर्यात्, ध्यानपूर्वक देवीसूक्तं पठेत् ॥
अष्टोत्तरशतं नवार्णमन्त्रं जपेत् । रहस्य त्रयं पठेत् ॥

॥ हवन समये कवचा हुति निषेधः ॥

तत्र सप्तशतीमध्ये कवच पञ्चदशामन्त्रः प्रमाणेदुर्गोपाशनाकल्पद्रुमेषु ॥ १६० मन्त्रकाउत्तरार्ध १९२-१६४-१६६-१६८-१७० मन्त्रकापूर्वार्ध पुनः १९५-१९६-१९७-१९९ पुनः २०१-२०३ पुनः ४८२-४८४-४८६-४८८ ॥

॥ मन्त्र कवच है अतः इन मन्त्रों पर आहुति देना महा अरिष्ट है ॥

इति मन्त्र प्रतिलोमपाठः

* देव्यपराधक्षमापन स्तोत्रम् *

न मन्त्रं नो यन्त्रं तदपि च न जाने स्तुतिमहो, न चाह्वानं ध्यानं तदपि च न जाने स्तुतिकथाः । न जाने मुद्रास्ते तदपि च न जाने विलपनं, परं जाने मातस्त्वदनुसरणं क्लेशहरणम् ॥१॥ विधेरज्ञानेन द्रविणविरहेणालसतया, विधेयाशक्यत्वात्तव चरणयोर्या च्युतिरभूत् । तदेतत्क्षन्तव्यं जननि सकलोद्धारिणि शिवे, कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥२॥ पृथिव्यां पुत्रास्ते जननि बहवः सन्ति सरलाः, परं तेषां मध्ये विरलतरलोऽहं तव सुतः । मदीयोऽयं त्यागः समुचितमिदं नो तव शिवे, कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥३॥ जगन्मातर्मातस्तव चरणसेवा न रचिता, न वा दत्तं देवि द्रविणमपि भूयस्तव मया । तथापि त्वं स्नेहं मयि निरुपमं यत्प्रकुरुषे, कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥४॥ परि-

त्यक्ता देवाविविध सेवाकुलतया, मया पञ्चाशीतेरधिकमपनीते तु
वयसि । इदानीं चेन्मातस्तव यदि कृपा नापि भविता, निरालम्बो लम्बो-
दरजननि कं यामि शरणम् ॥५॥ श्वपाको जल्पाको भवति मधुपाकोपम-
गिरा, निरातङ्को रङ्को विहरति चिरं कोटिकनकैः तवापर्णे कर्णे विशति प्रति
मनुवर्णे फलमिदं, जनः को जानीते जननि जपनीयं जपविधौ ॥६॥ चिता-
भस्मालेपो गरलमशनं दिक्पटधरो, जटाधारी कण्ठे भुजगपतिहारी पशु- लोम
पतिः । कपाली भूतेशो भजति जगदीशैकपदवीं, भवानि त्वत्पाणिग्रहण-
परिपाटीफलमिदम् ॥७॥ न मोक्षस्याकांक्षा भवविभववाञ्छापि च न मे, न
विज्ञानापेक्षा शशिमुखि सुखेच्छापि न पुनः । अतस्त्वां संयाचे जननि दुर्गा
जननं यातु मम वै, मृडानी रुद्राणी शिव शिव भवानीति जपतः ॥८॥
नाराधितासि विधिना विविधोपचारैः, किं रूक्षचिन्तनपरैर्न कृतं वचोभिः

श्यामे त्वमेव यदि किञ्चन मय्यनाथे, धत्से कृपामुचितमम्ब परं तवैव ॥९।

आपत्सु मग्नः स्मरणं त्वदीयं, करोमि दुर्गे करुणार्णवेशि । नैतच्छठत्वं मम भावयेथाः, क्षुधातृषार्ता जननीं स्मरन्ति ॥१०॥ जगदम्ब विचित्रमत्र किं परिपूर्णा करुणास्ति चेन्मयि । अपराधपरम्परापरम न हि माता समुपेक्षते सुतम् ॥११॥ मत्समः पातकी नास्ति पापघ्नी त्वत्समा नहिं । एवं ज्ञात्वा महादेवि यथा योग्यं तथा कुरु ॥१२॥

* भवान्यष्टकम् *

न तातो न माता न बन्धुर्न दाता, न पुत्रो न पुत्री न भृत्यो न भर्ता ।
न जाया न विद्या न वृत्तिर्ममैव, गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥१॥
भवाब्धावपारे महादुःखभीरु । पपात प्रकामी प्रलोभी प्रमत्तः ।
कुसंसारपाशप्रबद्धः सदाहम् । गतिस्त्वं० ॥२॥
न जानामि दानं न च ध्यानयोगं, न जानामि तन्त्रं न च स्तोत्रमन्त्रम् ।

न जानामि पूजां न च न्यासयोगम् । गतिस्त्वं० ॥३॥

न जानामि पुण्यं न जानामि तीर्थं, न जानामि मुक्तिं लयं वा कदाचित् ।
न जानामि भक्तिं व्रतं वापि मातर्गतिस्त्वं० ॥४॥

कुकर्मी कुसङ्गी कुबुद्धिः कुदासः, कुलाचारहीनः कदाचारलीनः । प्रति
कुदृष्टिः कुवाक्यप्रबन्धः सदाहम् । गतिस्त्वं० ॥५॥

प्रजेशं रमेशं महेशं सुरेशं, दिनेशं निशीथेश्वरं वा कदाचित् । लोम
न जानामि चान्यत् सदाहं शरण्ये । गतिस्त्वं० ॥६॥

विवादे विषादे प्रमादे प्रवा[illegible] चानले पर्वते शत्रुमध्ये । दुर्गा
अरण्ये श[illegible]दा मां प्रपाहि । गतिस्त्वं० ॥७॥

अनाथो दरिद्रो जरारोगयुक्तो, म[illegible]क्षीणदीनः सदा जाड्यवक्त्रः ।
विपत्तौ प्रविष्टः प्रणष्टः सदाहम् । गतिस्त्वं० ॥८॥

॥ इति श्रीमच्छङ्कराचार्यकृतं भवान्यष्टकं सम्पूर्णम् ॥

आरती श्री दुर्गाजी की

जै अम्वे गौरी मैया जै मंगल मूर्ती मैया जै आन [illegible]।

[illegible] शदिन ध्यावत हर ब्रह्मा शिवरी ॥टेर॥

मांग सिन्दूर विराजत टीका मृग म [illegible] से दोउ नैना चन्द्र बदन नीको ॥ जै० ॥१॥

कनक समान कलेवर रक्ताम्बर [illegible] ष्प वनमाला कंठन पर साजै ॥ जै० ॥२॥

केहरि वा [illegible] राजत खड्ग खप्र [illegible] सुर नर मुनिजन सेवित तिनके दुखहारी ॥ जै० ॥३॥

कानन कुण्डल शोभित नासाग्रे मोती । कोटिक चन्द्र दिवाकर राजत सम ज्योती ॥ जै०॥४॥

निशुम्भ विदारे महिषासुर घाती । धूम्र विलोचन नैना निश दिन मदमाती ॥ जै० ॥५॥

चौसठ योगिनीं गावत नृत्य करत भैरू । गावत ताल मृदंगा और व जत डमरू ॥ जै० ॥६॥

भुजा चार अति शोभित खड्ग खप्रधारी । मन वांछित फल पावत सेवत नर-नारी ॥ जै० ॥७॥

कंचन थाल विराजत अगर कपूर की वाती । श्रीमाल केतु में राजत कोटि रतन ज्योती ॥ जै० ॥८॥

दोहा—या अम्वे जी की आरती, जो कोई नर गावै ।
[illegible]नत शिवानन्द स्वामी, सुख सम्पति पावै ॥

नास्ति [illegible] ॥१२॥

प्रति लोम दुर्गा १४४